डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2003–05

R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

वर्ष 4, अंक 9, इलाहाबाद सितम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज

fgUnh ekfld if=dk

मूल्य 3 रुपये

बिजली की समस्या धीरे विकराल रुप धारण कर रही है

अटलजी को अब संन्यास ले लेना चाहिए

A+ Rated IT Institute

by All India Society for Electronics & Computer Technology

MIIT

MICROTEK INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY

(Direct Admission Notice for Session 04-05)

Affiliated with Makhanlal Chaturvedi University, Bhopal Recog. By U.G.C. & A.I.U

3 Years Full Time Regular Degree Programme

BCA

Bachelor of Comptuer Application
Eligibiliy: 10+2 With any discipline
Fee Structure: Rs. 10,000/- per semester

BSc(IT)

Bachelor of Information Technology
Eligibiliy: 10+2 With Mathmatics
Fee Structure: Rs. 8,000/- per semester

PGDCA

Post Graduate Diploma in Computer Application
Eligibiliy: Graduation in any disciplineFee : Rs. 7,000/- per semester

MICROTEK

NIRMAL COMPLEX, MALDAHIYA, VARANASI Tel: 0542-2207001, 2207002, Fax : 0542-2208248

Separate Hostel Facility for Boys and Girls

With Best Complement For Happy New Year

SHYAM LAL INTER COLLEGE

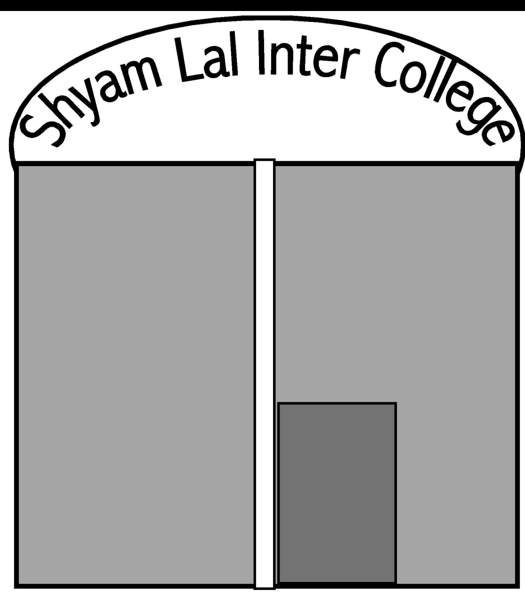

Reco. By: U.P. Government

Class K.G-I to 12th For Boys and Girls Science & Art Group

For Detail Contact:
Anil Kumar Kushwaha
Manager,
Chkiya, Kasari-Masari, Allahabad
☎ 2636421 Mo:9839584648

वर्ष : 5, अंक : 1 जनवरी 2005

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान संपादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्य. संपादकः

डॉ0 कुसुमलता मिश्रा

विज्ञापन प्रबंधक/प्रबंध संपादक

श्रीमती जया शुक्ला

उप संपादक

रजनीश कुमार तिवारी

ब्युरो प्रमुखः

गिरिराजजी दूबे

छायाकारः

पतविन्दर सिंह

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा। संपादक, प्रकाशक, मुद्रक जी.के.द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

मूल्य एक प्रति : 3.00रुपये

वार्षिक मूल्य : 35.00 रुपये मात्र

विशिष्ट सदस्य : 100.00रुपये मात्र

पंचवर्षिय सदस्य : 160.00 रुपये मात्र

आजीवन सदस्यः 1100.00 रुपये मात्र

संरक्षकः 5000.00 रुपये मात्र

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी.-६३, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद -२११०११

मो०: ०५३२-३१५५६४६

प्रातः ही होता है मनहूस खबर से

आजकल प्रातः उठकर समाचार पत्र पढ़ने की आदत डालने वालो की सुबह मनहूस खबरों से ही होती हैं. फला ट्रेन पटरी से उतरी जिसमें दस यात्री मरे और 40 घायल, फला ट्रेन लड़ गई, 40 मरे 300 घायल, ट्रक और कार की टक्कर तीन मरे चार घायल, एक टेम्पो ने एक स्कूटर/बाईक सवार को टक्कर मारी, दस लोग घायल, एक पांच बच्चों की मां अपने पड़ोसी के साथ फरार, बेटे ने पैसे की खातिर अपनी पिता को चाकूओं से गोंदा, एक छह साल की लड़की के साथ बलात्कार, फला पुलिस/दरोगा के लड़के लूट में शामिल, इत्यादि खबरे लगभग प्रत्येक समाचार के प्रथम पृष्ठ पर मुद्रित होती हैं. जब सुबह की शुरुआत ही इन मनहूस खबरो से होगी तो दिन तो ऐसे ही बीत जाना हैं. इन ख़बरों को देखकर/पढ़कर ऐसा लगता है या तो हमारा समाज बदल गया हैं या हमारी सोच. शायद दोनों का बराबर का योगदान हैं. किसका योगदान अधिक है मैं निश्चित रुप से तो कुछ नहीं कह सकता. कुछ सर्वे एजेंसियों को चाहिए कि वे इस मुद्दे पर भी सर्वे कराएं. हमें कम से कम यह प्रयास करना होगा कि समाचार पत्र का प्रथम पृष्ठ अच्छी खबरों को समेटे हुए हो. कम से कम सुबह मनहूसियत की खबर से बचाव तो हो जाएगा. आजकल शायद हमारे सम्मानीत पाठक इन खबरों को समेटे हुए अखबार और पत्रिका को ही पढ़ना ज्यादा पसंद करते हैं. ऐसा मेरा अपना अनुभव रहा हैं. कभी पाठको के पत्र आते हैं ऐसी खबरे आप डाले आपकी पत्रिका में जान आ जाएगी. कुछ लोगों और दुकानदारों ने तो यहां तक सलाह दी कि नई दिल्ली की शायद भारत में सबसे अधिक बिकने वाली पत्रिका के जैसा बना डालिए आपकी बिक्री में भयंकर इजाफा हो जाएगा. मगर अभी तक तो मेरा यही प्रयास है कि इससे जहॉ तक हो सके बचा जाएं.

हमें बेहद खेद है

हमें असहय खेद के साथ यह लिखना पड़ रहा है कि दिसम्बर अंक त्रुटियों से परिपूर्ण हो गया था. यहां तक की अपनी बात में भी कुछ त्रुटिया मुद्रित हो गयी थी. ऐसा मेरे कनिष्क सहयोगियों की कर्तव्यहीनता व मेरी अतिशय व्यस्तता के परिणाम स्वरुप हुआ. इसके लिए मुझे खेद हैं. मेरा यह आगे से प्रयास होगा कि आगे के अंक त्रुटि रहित रहें. आपके सहयोग के लिए धन्यबाद. इस ओर हमारा ध्यान फोन व पत्र के माध्यम से कुछ सम्मानित व सुविज्ञ पाठको ने भी दिलाया हम उन सभी पाठको के हार्दिक ऋणि है और रहेंगें. हम यह उम्मीद करते है कि आप अपना सानिध्य व अपनत्व बरकरार रखेंगें.

नववर्ष की हार्दिक मंगलकामनाओं सहित आपकाः जी.के.द्विवेदी

(प्रधान संपादक)

क्रिसमस, नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस के शुभअवसर पर सभी पाठकों एवं नागरिकों को हार्दिक बधाई

मो. हलीम अंसारी

जिला महासचिव,कांग्रेस, इलाहाबाद

नि0: सहसो, इलाहाबाद फोन:88213, 88224

क्रिसमस, नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस के शुभअवसर पर सभी पाठकों एवं नागरिकों को हार्दिक बधाई

चौधरी परशुराम निषाद

प्रदेश प्रभारी, अपना दल,

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस के शुभअवसर पर बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं एवं पूरे नगरवासियों को हार्दिक बधाई

अभयानन्द तिवारी

उपाध्यक्ष, छात्रसंघ,

बी.आर.डी.बी.डी.पी.जी. कॉलेज,

आश्रम, बरहज

With Complement for New Year

Children Academy

(English Medium)

Pre Nursery to Class VIII[th]

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Cont.: H.I.G.-3, Preetam Nagar, Allahabad Ph. 2233763

Principal
Preeti Bosh

चिन्तित क्यों! चिन्तित क्यों!

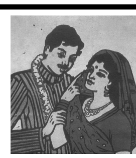

मर्दाना कमजोरी एवं गुप्त रोगों का ईलाज अब बिल्कुल आसान

(ईलाज आधुनिक तरीकों एवं दवाओं द्वारा)

डॉ० दीवान क्लीनिक
हरबंश सिंह

3, शिवचरन लाल रोड, (विश्वम्भर सिनेमा के सामने), इलाहाबाद दूरभाषः (0532)–2401076

With Complement for New Year

Kishore Girls Inter College & Convent School

Reco. By. U.P.Government

Nursery to Class XII[th]

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar, G.T. Road, Allahabad

Manager
V.N.Sahu

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा हैं   मानव सेवा ही ईश्वर सेवा हैं   मानव सेवा ही ईश्वर सेवा हैं

दाउजी का है कहना, हर अनाथ व बृद्ध है मेरा अपना

क्रिसमस, नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस के शुभअवसर पर सभी पाठकों एवं बरहज विधानसभा क्षेत्र के नागरिकों को हार्दिक बधाई

दाऊ जी
संचालक
स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं बृद्धाश्रम)
प्रबंधकः जी.पी.एफ.सोसायटी

आइये हम प्यार बॉटने की कला सीखें

चलिए हम इस पन्ने पर एक बच्चे की नयी जिन्दगी/एक असहाय की सेवा के नाम लिखें–

जी, हॉ, आप किसी की उजड़ी जिन्दगी में फर्क ला सकते हैं और वो भी मात्र एक रुपये में

मैं एक बच्चे की पढ़ाई के लिए/असहाय की सेवा के लिए/विधवा के लिए/ बृद्ध के लिए रु0 30/–प्रति माह (रु0 360/–वार्षिक) दे रहा हुं. मैं जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट/चेक (कृपया बाहर चेक पर अधिभार शामिल कर लेवें) भेज रहा हुं.

नाम : ....

पिता का नामः ....व्यवसायः...............................

पताः...

मैं एक बच्चे की पढ़ाई/असहाय की सेवा/विधवा/बृद्ध के लिए रुपये ....(शब्दों में).. मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट/चेक (कृपया बाहर चेक पर अधिभार शामिल कर लेवें) भेज रहा हुॅ.

हमारा पताः
प्रबंधक, जी.पी.एफ. सोसायटी,
एल.आई.जी–93, नीम सराय
कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–11

आपके विचार स्नेह के साथ

रचनाओं का चयन बहुत उच्चकोटि का है

आदरणीय द्विवेदीजी, नमस्ते

विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. अंक पढ़कर बहुत अच्छा लगा. रचनाओं का चयन बहुत उच्चकोटि का हैं. पत्रिका में बच्चो से लेकर बृद्धों तक के लिए पठन सामग्री है. कुशल सम्पादन के लिए अनेको साधुवाद.

नरेश सिह बोहल, जिला न्यायालय, भिवानी, हरियाणा, 127021

साहित्य शैली से महकता, व्यंग्य सरताज विश्व स्नेह समाज

संपादक जी, सादर अभिवादन

सनातन साहित्य शैली से महकता, व्यंग्य सरताज से चम–2 चमकता, कवित्त, कथा के सरोवर से विहरता 'विश्व स्नेह समाज' का अक्टूबर 04 का अंक प्राप्त हुआ. सुपाठ्य, अनुकरणीय, संग्रहणीय लगा इसके लिए आभार. आज विश्व का स्नेहिल समाज दूषित हो रहा है. समाज की बुराई के चपेट में बच्चे अधिक से अधिक आ रहे हैं और विश्व का भविष्य बच्चों पर ही निहित हैं. साथ ही पाठकों के विचार स्तम्भ पर विशेष ध्यान दें क्योंकि पाठकों की प्रतिक्रिया छपने पर पाठकों में पठन व प्रचार का अत्यधिक उत्साह होता हैं. शेष आपका पत्र सराहनीय है. साथ ही ईश्वर से शुभकामना है.

शोषित, गरीब, धनहीन, दलित
हर जन की लाज बचायेगा
चमक उठेगा साहित्य गगन में,
बनकर उज्जवल नक्षत्र
एक दिवस बन जायेगा,
सब पत्रों का सिर–छत्र.

भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय',
चक पैगम्बरपुर, सिधॉव, फतेहपुर–212663

आदरणीय संपादक जी सादर नमन! शतायु हो! शुभकामना! आपका सम्मानार्थ सूचना मासिक सुपर इंडिया मासिक 'विश्व स्नेह समाज' प्रकाशित कर समाज के विकास में सलंग्न हैं. इस पुनीत कार्य हेतु सधन्यबाद. कृपया यह पत्रिका भेजकर मेरे साहित्यिक मनोभाव को ऊँचा करेंगें. आप सुन्दर विचार से भावनाओं का भोजन करा रहे हैं. रचना आईना है. साहित्य सेवा पूरी तपस्या है.

डॉ. हीरा लाल सहनी
मु. सेनापत, वार्ड न. 19, पो. लालबाग, जिला–दरभंगा, बिहार–846004

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप हिन्दी सेवा विशेषांक निकालने जा रहे हैं. हमारी शुभकामना आपके साथ हैं. हम यहॉ से कुछ संस्थाअें का परिचय भेजने का प्रयास कर रहे हैं. शुभकामनो के साथ.

विनोद कुमार दुबे, हिन्दी सेवा शिक्षा निकेतन, 3/3, सुखसागर, सोसायटी, जयदेवसिंह नगर, मांडुप, मुबंई

पत्रिका की प्रशंसा कई पत्रिकाओं में मिली

महोदय जी, नमस्ते

आपके पत्रिका का प्रंशसा कई पत्रिकाओं में पढ़ने को मिला, पत्रिका में चन्दे की तालिका नहीं रहने के कारण चन्दा नही भेजा रहा हूॅ. अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो कृपया आप अपने पत्रिका की एक प्रति हमारे संस्था के नाम अवलोकनार्थ भेज दें. पत्रिका आते ही चन्दा मनिआर्डर द्वारा भेज दूंगा.

द्वारिका प्रसाद,,शिक्षा संस्थान, दरुआरा, पो. दरुआरा, जिला–नालदा, बिहार

कलेवर में सुधार v i S{kr g`

आपका प्रयास अच्छा है. कलेवर और स्तर दोनों में सुधार अपेक्षित है. सामग्री चयन में किचिंत कठोरता आवश्यक हैं. यह एक अच्छी पारिवारिक व सामाजिक पत्रिका बन सकती है और विश्वास है कि बनेगी भी एक दिन. मुझे आपका रचनात्मक सहयोग करके बड़ी प्रसन्नता होगी, मगर चूंकि मैं श्रमजीवी लेखक हूॅ, अतः पारिश्रमिक की आशा रखना मेरी मजबूरी हैं. यदि आपका अनुकूल उत्तर मिला तो सेवा के लिए संकोच न करुंगा. शुभकामनाओं और सदभाव के साथ. **रामस्वरुप दीक्षित**,
सिद्धबाबा कॉलोनी, टीकमगढ़, 472001

आदरणीय द्विवेदी जी,

विदित हुआ है कि आप मासिक 'विश्व स्नेह समाज' का सम्पादन कर रहे हैं. कृपया हिंदी सेवा विशेषांक की नूमना प्रति भिजवायें ताकि अवलोकन कर सदस्यता राशि भिजवा सकें.

डॉ. धनपत सिंह 'शिवराण', ग्रा.व पो. डालाबास वाया बाढ़ड़ा, जिला–भिवानी, हरियाणा127308

सम्पादक, माननीय द्विवेदी जी, सादर सप्रेम नमस्कार!

आपकी मासिक पत्रिका के प्रकाशन का शुभसमाचार ज्ञात हुआ. आपने मेहनत द्वारा हिंदी साहित्य जगत में अपनी पहचान बनाई हैं.

आपसे नम्र निवेदन है कि कृपया हिदी सेवा विशेषाक की एक प्रति हमें भिजवायें. **दर्शन सिंह रावत,**
ज–10, से0 5, हिरण मगरी, उदयपुर–2

आदरणीय संपादक महोदय,

विश्वास है स्वस्थ व सानन्द होंगें. विश्व

स्नेह समाज पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. रचना प्रकाशन के लिए हृदय से आभारी हुं. प्रकाशनार्थ दो मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ प्रेषित कर रहा हॅं. कृपया पत्रिका में स्थान देकर अनुग्रहित करें. सादर **प्रकाश सूना,** मुरलीधर सदन, 187–बी, गॉंधी कॉलोनी निकट गॉंधी वाटिका, मुजफफरनगर,251001

सम्मान्य संपादक महोदय, प्रणाम राम नाम स्मरण! आप द्वारा संपादित मासिक पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. ध ान्यबाद. इसे मैं अपने द्वारा आयोजित पत्रिका प्रर्दशनी में भी सम्मिलित करुंगा. आध्यात्मिकता मानवीय जीवन का एक अनिवार्य आवश्यक हैं. अतः पत्रिका के प्रत्येक अंक में एक आलेख आध्यात्मिक भी होना चाहिए. शेष भगवत्कृपा.

कैलाश त्रिपाठी,
शिवकुटी, अजीतमतल, औरैया, उ.प्र.

मोहतरमा बहन श्रीमती शुक्ला साहिबा,आदाब अर्ज़ हैं
आप का पोस्ट किया हुआ अंक मिला. शुक्रिया. इसमें कहॉनियों के साथ काव्य धारा भी अच्छी हैं. डॉ. राजकुमारी शर्मा राज पे लेख जानकारी से भरा हैं. सम्पादकीय टीम को मुबारकबाद पेश हैं. **आरिफ़ जमाली,**
पो. कामटी, महराष्ट्र–441002

सम्पादक महोदय, सादर नमस्कार. पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका को पढ़ा तो लगा कि सामग्री को परोसा तो ढंग से गया है किन्तु वर्तनी सम्बंध ी त्रुटिया बहुत है. आशा है कि आपने बाद के अंक में अपेक्षित सुधार कर लिया होगा. चार पक्तियां पत्रिका के लिए प्रेषित है–

है किसे चिन्ता,
समूचे विश्व के स्नेह की
फिक्र है हर आदामी को
सिर्फ अपने गेह की
कौन कितना प्यार करता,
कौन कितनी नफरतें
हम सभी ने तोड़ दी है
डोर अपने नेह की.

पत्रिका भेजने के लिए धन्यबाद **सुधीर कुमार मिश्र,**सी/ओ–श्याम मेडिकल स्टोर, धिरोर, मैनपुरी, उ.प्र. 205121

अवश्य ही साहित्य जगत में एक पहचान कायम होगी इसकी

आदरणीय श्रीमान श्री प्रधान संपादक महोदय, जयसिंह अलवारी का सप्रेम प्रणाम स्वीकारें. पत्र लिखने का मुख्य कारण यह है कि पत्रिका बहुत ही सुन्दर लगी. स्वच्छ सम्पादन देख के मन गद–गद हो उठा. इतना सुन्दर स्वच्छ संकलन आज बहुत कम देखने को मिलता है. दयालू परमपिता परमात्मा से से मेरी प्रार्थना है कि वो इस सुन्दर स्वच्छ पत्रिका को ढ़ेरा कामयाबी दे. हमारा पूरा सहयोग आपके साथ है, किसी भी प्रकार कि सेवा हो तो अवश्य लिखे जीं. **जयसिंह अलवारी,** देलही स्वीट स्टॉल, बस स्टैंड के पास,सिरगुप्पा,बेलरी, कर्नाटक, 583121

बरहज का एक दो समाचार प्रत्येक अंक में निकालने का प्रयास करें पत्रिका में एक से बढ़कर एक जानकारी दें ताकि हम पत्रिका के दिवाने हो जाये और पत्रिका में कुण्डली दर्पण चालू करे कष्ट करें. सवाल जबाब का एक कॉलम खोल ताकि हम आपसे कुछ सवाल कर सकें. क्रिकेट के बारे में अवश्य दे. अगर सम्भव हो सचिन का साक्षात्कार प्रकाशित करें. **डॉ. विवेक रंजन नियोगी,अशगर अली, गोपाल जायसवाल, जमालुद्दीन** बरहज, देवरिया

हिन्दी को बेचारी कहना, अपना, उसका अपमान करना है

आलोकमयी दीपोत्सव पर हार्दिक मंगल कामनाएं. आपका कृपा पत्र एवं स्नेह पत्रिका का नवम्बर अंक मिला. पत्रिका में उत्कृष्ट सामग्री प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई. हिन्दी को बेचारी कहना, अपना, उसका अपमान करना हैं.सम्पादकीय विद्वतापूर्ण एवं विचोरोत्तेजक हैं.
श्याम सुन्दर सुमन, बी–320, सुभाषनगर, भीलवाड़ा,

बहुत ही ज्ञानवर्धक, रोचक व विचारोत्तेजक है पत्रिका

आदरणीय द्विवेदी जी,
मात्र तीन रुपयें में इतनी ज्ञानवर्धक, रोचक, विचारोत्तेजक पत्रिका प्रकाशित करके आप हिन्दी साहित्य की महती सेवा कर रहे हैं .कुमकुम शर्मा का 'क्यों नहीं उभरकर चमक पा रही है महिला पत्रकार' आलेख विचारोत्तेजक तो है ही जनमानस को यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि शक्ति स्वरुपा नारी को समाज में उसका उचित स्थान मिलना ही चाहिए. निराली जी गितिका में लिखते हैं–

शिव शव शक्ति महान!

आखिर हम कब तक अपाला, घोषा, गार्गी, मैत्रेयी, सीता सावित्री, अनुसुइया जैसी देवियों के देश भारत में इस शक्ति को उपेक्षित रखेंगें?
डॉ. बाला वत्स, सचिव, हिन्दी साहित्य प्रचार समिति, 3/79, दयालबाग, आगरा

आपके द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. इसको प्राप्त कर मन आपके प्रति कृतज्ञता से भर गया.

डॉ. दिवाकर दिनेश गौड़
डी–14, आनंद नगर सोसायटी, सयन्स कॉलेज के पीछे, गोधरा, गुजरात

कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराते रहें. आप हमें प्रशंसा के साथ शिकायते भी भेजते रहें. हम आपकी शिकायतों व सुझावों का भी खुले दिल से स्वागत करेंगें.

भारत–पाक रिश्ता

क्या युद्ध ही समझौता है?

✍डॉ0 कुसुमलता मिश्रा 'सरल'

युद्ध ही अन्तिम निर्णय है अपने समस्त अधिकार पाने के लिये, शक्ति का सम्पूर्ण प्रदर्शन करने भौगोलिक, आर्थिक एवं जन शक्तियों का विस्तार करने के लिए. हमारा इतिहास गवाह है, भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र रहा हैं और यहां तमाम नरम पंथी राज नेता रहे हैं जिन्होनें अपनी उदारता, मानसिक, आध्यात्मिक चेतना के चलते युद्ध को शान्ति में तबदील करना उचित समझा, जिसका उदाहरण शिमला समझौता, आगरा शिखरवार्ता, दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा किन्तु इसका प्रतिफलन भारत बंग्लादेश का विखण्डन, कारगिल युद्ध के रुप में हुआ. 11 सितम्बर को पेंटागन का विध्वंस अमेरिका के लिए समस्या बन गई 'जार्ज बुश' ने इसका प्रतिकार तालिबान को विनष्ट करके लिया. बदले में उन्हें तीखी आलोचनाओं का प्रहार झेलना पड़ा और आतंकवाद घरेलू से बदल कर अर्तराष्ट्रीय मुद्दा बन गया.

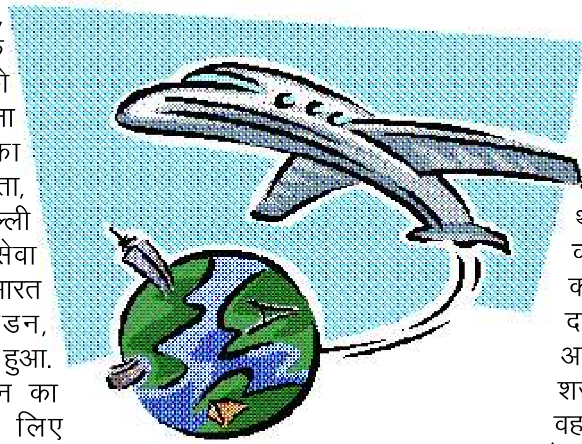

आगरा शिखर वार्ता की विफलता कश्मीर मे ंनये आंतकवादी हमलों, रक्त पात की भयंकर त्रासदी का रुप लिया. 1 अक्टूबर को जम्मू कश्मीर में विधानसभा परिसर पर हमले का दुस्साहस बाजपेयी जी के शान्ती मंत्र जाप को भंग कर दिया. अमेरिका के राष्ट्रपति बुश के नाम उनका पत्र उनके धैर्य की सीमा का संकेत था. उन्होंने जवाबी हमले की सभावना पर परामर्श शुरु कर दिया. किन्तु बात फिर दब गई, पुनः पाकिस्तान ने आतंकियों को अपने यहां शरण देना शुरु कर दिया. वह उन्हें भारत को नहीं सौपता था. ये सभी खुल्लम खुल्ला सैनिक कार्यवाही के पक्ष में था. आम जनों

युद्ध की अड़चने

1. पाकिस्तान के खिलाफ सम्पूर्ण लड़ाई का मतलब आर्थिक, राजनैतिक, सैनिक कुटनीति का कवायद

2.युद्ध के चलते संदिग्ध आतंकवादी को बिना मुकदमा दायर किये क्या लम्बे समय तक रख पायेगी, गृह मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार स्वयं भारत मे ं30,000 लोग है जो सुरक्षा के लिए खतरा है.

3.युद्ध से भारत अन्तराष्ट्रीय समुदाय में अलग पड़ जायेगा. इसका लाभ पुनः पाकिस्तान ले जायेगा. उसे आतंकवाद के खिलाफ बने अर्न्तराष्ट्रीय गठजोड़ से निकलने का बहाना भी मिल जायेगा. युद्ध के बाद भारत के अफगानिस्तान के रिश्ते नहीं बन पायेंगे.

4. अलकायदा के साथ अर्न्तराष्ट्रीय लड़ाई कमजोर पड़ जायेगी.

5. भारत के दीर्घ कालिक हितो की क्षति पहुँचेगी.

6. मौजूदा आर्थिक मंदी भी पाकिस्तान भारत के युद्ध के खिलाफ तर्को में प्रमुख हैं. एक अनुमान के तहत सिर्फ कश्मीर में दो हफ्ते चलने वाले युद्ध पर 60000 करोड़ रुपये का खर्च आयेगा और अगर इसने चौतरफा युद्ध का रुप ले लिया तो इसकी कीमत का अंदाजा लगाना मुश्किल हैं.

7. नाभिकीय हथियारों की होड़ और रेडियों धर्मिता का खतरा नागासाकी हिरोशिमा का द्वितीय विश्वयुद्ध इस बात का प्रमाण है.

जैविक हथियार आज के मानव के लिए अभिशाप है, एंथ्रेक्स, वैक्टिरीयल वायरस, मानव चेतना को ही ध्वस्त कर देगा. यह परमाणु युद्ध विज्ञान का सबसे दुःखद पहलू हैं. अतः वर्तमान परिदृश्य में भारत के लिए युद्ध करना पूरे विश्व का विनाश है. परमाणु हथियारों के जखीरे निकलने शुरु होंगें तो राष्ट्र शक्तियॉ होड़ में एक दूसरे से आगे निकलने के लिए अपने–अपने सामरिक शक्तियों का प्रदर्शन करेंगी जिसमें विनाश, विध्वंस असहाय बृद्धों बच्चों, महिलाओं एवं गरीब का होगा. शक्तिशाली तो अपने सुरक्षा कवच में प्रवेश कर जायेगें, भारत 100 वर्ष पीछे चला जायेगा. विनाश विकास में विचारों की दूरी की ही दूरी होगी. अतः युद्ध अनुचित है शांति ही समझौता हैं.

में यह विद्रोही भावना थी कि यदि अमेरिका अपने नागरिकों को मारे जाने पर 10,000 कि.मी. दूर हमला कर सकता है तो भारत अपने भारती के कश्मीर स्वर्ग के लिए क्यों नहीं युद्ध कर सकता, बात शत प्रतिशत सत्य भी हैं.मॉ वैष्णव के दर्शन करने भक्त दूर दराज से यहां दर्शन आते थे, काफी संख्या में पर्यटक यहां घूमने आते थे. वहां अब लगभग सन्नाटा हैं. रास्ते बंद हैं. खून की होली खेली जा रही हैं. मानवता भयाक्रांत है. फिर भी भारत शान्त हैं. महाभारत में कृष्ण ने अर्जुन से अन्याय के विरुद्ध युद्ध करने का आदेश दिया था, उनका मनोबल बढ़ाया है, गीता उन्हीं के वाणी का ग्रन्थ हैं.

मयी कर्माणी सर्वाणी सन्यास अध्यात्म चेतसा।
निराशी निर्ममों मुखा युद्ध स्व विगत् ज्वर।।

मैं ही सब कुछ करने वाला हूँ, मैं ही सब करता हूँ, निराशा को त्यागों, निर्मम होकर युद्ध में रत हो।

किन्तु आज के इस भौतिकवादी युग में कृष्ण जैसे नीति परक युग पुरुष है न अर्जुन जैसे संरसघानक साधक, सो धर्म युद्ध तो होने से रहा बल्कि सारे राष्ट्र तमाशा देखने वालो में हो जायेगें.

अतः यह सच है कि भारत को वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर जितनी ऊँची और लोमहर्षक त्रासदी का सामना नहीं करना पड़ा है किन्तु भारत के कश्मीर में रक्त मृत्यु का साया हमेशा मंडराता रहा हैं. पाकिस्तान आतंक का प्रायोजक देश है और लोक तात्रिंक भारत उसका पुराना भुक्त भोगी. तालिबान पर युद्ध करने के बाद से अमेरिका का इस्लामी देशों के प्रति दोस्ताना रुख अख्तियार करना उसकी कूटनीति है जिसे भारत को जानना चाहिए. अतः भारत पाक–युद्ध खतरनाक हो सकता है.

खतरनाक चलन हैं सीमा से सटे इलाकों में मजारों का बनना

स्नेह ब्यूरो रिर्पोट

सीमा प्रबंधन पर केन्द्रीय गृह मंत्रालय के केंद्रीय कार्यदल की रिर्पोट में भारग-बांग्लादेश सीमा और भारत-नेपाल पर दूसरी तरफ से जनसांख्यिकीय आक्रमण पर गहरी चिंता प्रकट की थी. इस समय देश में तकरीबन हजार पंजीकृत मदरसे है जबकि छोटी-छोटी मस्जिदों में अस्थायी रुप से एक लाख से अधिक मदरसे चल रहे हैं.

सन् २००२ में तत्कालीन केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री चौधरी विद्यासागर राव ने मदरसों को पंजीकृत करते समय सतर्कता बरतने की अपील की थी. उनकी अपील का आधार मत्रियों के एक समूह का एक अध्ययन था, जिसमें पाया गया कि देश के बाहर सीमांत प्रदेशों के ११,४५३ मदरसों के अलावा भी मदरसों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही हैं. उन्होंने आईएसआई के हवाला से मदरसों को अवैध धन मुहैया करवाने के कई मामलें प्रकाश में आने की बात भी कहीं.

राजस्थान का १०३ किलोमीटर का इलाका पाकिस्तान से लगा हैं. राजस्थान और गुजरात के सीमावर्ती इलाके में कई मदरसें व मस्जिदें तालीम देने के काम में जुटी हैं. सीमा के दस किलोमीटर भीतर स्थितियों में मदरसों की गतिविधियों का खुलासा करते हुए खुफिया रिर्पोट में लिखा गया है कि श्री गंगानगर, बीकानेर, जेसलमेर और वाड़मेर के इलाके में स्थित मदरसे आईएसआई की गतिविधियों का केन्द्र बन गए हैं. जैसलमेर में २८ मस्जिदों मे मदरसें खुले हैं जबकि यहां ८३ हजार अल्पसंख्यंक आबादी हैं. ६४ हजार अल्पसंख्यक आबादी वाले वाड़मेर में १०५ मस्जिदें व मदरसें हैं. आतंकी गतिविधियों के चलते जेसलमेर के जिलाधिकारी को साम गांव, मगरे बस्ती तथा टोडा स्थित तीन मस्जिदां को गिराने का आदेश देने पड़े थे. तस्करों से भी इन मदरसों को पैसा मिलने के सबूत हैं.

राजस्थान में भारत-पाकिस्तान सीमा पर बीकानेर, अनूपगढ़, सूरतगढ़ और श्रीगंगानगर सेक्टरों के संवेदनशील इलाकों के करीब पचास सदस्यों और मजारों के कुकुरमुत्ते की तरह से पनपने से भारतीय सुरक्षा एजेंसियां सकते में आ गई हैं. खुफिया ब्यूरों के अधिकारियों का आरोप हैं कि सीमा पर जनसाख्यिकी अनुपात को बदलने और भारतीय सेना की टुकड़ियों की आवाजाही पर नजर रखने के उद्देश्य से ऐसे इस्लामी संस्थानों वाले सीमांत गांवों के नामों वाली एक ऐसी ही रिपोर्ट राजस्थान सरकार को भी भेजी गई थी. पर उसका कोई प्रत्युत्तर नहीं आया. इन सर्वेक्षण में राजस्थान में महाजन, हनुमानगढ़, मनोरिया, लैलामजंनू के अलावा ममदूत, सलेमशाह और पंजाब के फजिल्लका-फिरोजपुर सेक्टरों के कुछ स्थान शामिल हैं.

एक अन्य खतरनाक चलन इन इलाकों में मजारों का बनना हैं. भारतीय सीमा चौकियों से कुछ गज की ही दूरी पर मजनूं, २७ एक जैसे गांवों में ऐसी मजारों के बनने की खबरे हैं. यह कोई कहने की बात नहीं है कि इनका इस्तेमाल भारतीय सेना की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए किया जाा सकता हैं.

पिछले साल करवाएं गए एक अधिकारिक सर्वेक्षण से पता चला कि राजस्थान के सीमांत इलाकों में मदरसों के बढ़ने से धार्मिक पहचान के प्रति आग्रह बढ़ रहा हैं. गुजरात और पश्चिम बंगाल के सीमात क्षेत्रों में भी यह बात सही साबित हो सकती हैं, जहां ऐसे ही सर्वेक्षण करवाएं गए हैं. केंद्रीय गृह मंत्रालय के आदेश पर सीमा सुरक्षा बल द्वारा किए गए एक सवेक्षण में पाया गया कि काफी हद तक समान सांस्कृतिक पंरपरा रखने वाले ग्रामीण धर्म-आधारित जीवन पद्धतियों को अपनाने लगे हैं. ऐसा पाया गया कि पहले घाघरा-चोली पहनने वाली मुस्लिम औरतों ने अब सलवार-कमीज और ज्यादतर बुरका पहनना शुरु कर दिया हैं. मुस्लिम पुरुष भी धर्म के अनुरुप धोती को छोड़कर अब ज्यादातर बनियान और रंगीन डिजाइन की लुंगिया पहनने लगे हैं. अब लगभग सभी मुस्लिम पुरुष टोपी पहनते हैं. खान-पान की आदतें भी बदल रही हैं. सर्वेक्षण के अनुसार करीब दो साल पहले तक इन इलाको में कोई भी गोमांस का सेवन नहीं करता था. अब अधिकतर मुसलमानों ने इसे खाना शुरु कर दिया हैं. अब सामाजिक व धार्मिक उत्सवों भी धर्म के आधार पर होने लगे हैं.

सनातन धर्म मंदिर के पुजारियों ने एक सैनिक को पीटा

स्नेह ब्यूरो रिर्पोट

उत्तर प्रदेश के नवनिर्मित जिले कुशीनगर जिले के प्रसिद्ध रामकोला कस्बे में स्थित करोड़ो रुपये की लागत से निर्मित परमहंस आश्रम का सनातन धर्म मंदिर वास्तव में भारत की धर्मनिरपेक्षता की छवि को उजागर करता हैं. इस मंदिर के निर्माण के पीछे बताया जाता है कि परमहंस आश्रम में काई संत थे उनकी ईच्छा थी कि हमारे पैतृक निवास के आसपास ऐसा मंदिर बने. उनकी ईच्छा की पूर्ति उनके मरणोपरान्त उनके शिष्यों द्वारा उनका घर ढूढकर की गयी. कुछ सरकारी कुछ खरीद कर इस मंदिर की निर्माणा करवाया गया. इस मंदिर में वास्तव में करोड़ो रुपये खर्च हुए होगें. इस मंदिर में हिदू धर्म से लेकर मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन बौद्ध, यहूदी, पारसी धर्म के संत, महात्माओं के चित्र उनके जीवन परिचय के साथ दर्शाए गए हैं. यह मंदिर वास्तव में देखने योग्य हैं अगर यहां पर वास्तविक पुजारियों के हाथो में प्रबंधन सौंप दिया जाए. गीता के उपदेश के चित्रों से सुसज्जित भव्य गेट से प्रवेश करते ही एक बड़ा सा खाली लम्बा सा किंतु आकर्षक मनमोहने वाला फर्श. गेट के बायी तरफ सुरक्षा गार्डो का कमरा जैसे आप किसी बड़े नेता या अधिकारी के आवास पर जा रहे हों. गेट का थोड़ा सा भाग ही खुला मिलता हैं. फर्श पर कुछ दुर चलने पर जुते व चप्पल निकाल कर रखने की व्यवस्था है. वहीं हाथ पैर धोने के लिए टंकी के नल व हैडपाइप लगे हुए हैं. उसके बाद दूसरा विशालकाय गेट जिस पर हाथ में डंडा लिए हुए पुजारियों का सख्त पहरा. जैसे आप किसी मंदिर में नहीं बल्कि किसी वी.आई.पी. के पास जा रहे हो जिसे सुरक्षा का खतरा हो. गेट के तूरंत बाद ही बहता हुआ पानी जो स्वतः ही आपके पैर धो देगा. आपको पैर धोने की जरुरत हीं नही है. सगमंरमर के पत्थरों से निर्मित सड़क पर कुछ दूर चलने पर एक मोटी चटाई आपके पैर स्वतः पोछने के लिए रक्खी हुई हैं. उसके कुछ दूर बाद एक पतली चटाई ताकि आपके पैर से धूल का एक कड़ भी अंदर न जा सके. सड़क के दोनों तरफ फूलों व विभिन्न प्रकार की कलाकृत्तियों से सुसज्जित लान जो वाकई पहली ही नजर में आकर्षित करते हैं. प्रारम्भ में थोड़ा नीचे के तरफ गर्भ गृह हैं. यह मंदिर गोल आकार में निर्मित हैं. जैसे यह दर्शाता हो कि पूरा विश्व यहीं समाहित है. दायी तरफ सीढ़ी चढ़ने के लिए तथा बायी तरफ सीढ़ी उतरने के लिए बनी हुई हैं. यह मंदिर पॉच मंजिल तक बना हुआ हैं. प्रत्येक मंजिल पर तेल से पिरोया हुआ सोटा (डंडा) लिए हुए पुजारियों का संख्त पहरा. सबसे नीचे कैलाश पर्वत का विद्युतीकृत भव्य दृश्य, उसके बाद बीच में देवी देवताओं की मूर्तिया व उसके चारो तरफ विभिन्न धर्मो के संतो, पुजारियों की मूर्ति व उनकी संक्षिप्त जीवनी. एक बार देखकर मन करता है मंदिर को बनवाने वालो ने वाकई सनातन धर्म को उकेर दिया हैं. इसी भव्यता को सुनकर देवरिया जिले के बरहज तहसील से एक प्रतिष्ठित, ब्राहमण परिवार की बारात 26 नवम्बर को रामकोला से लगभग 15 किलोमीटर दूर गई थी. 27 नवम्बर 04 बारात लौटते समय मंदिर के बारे मे कुछ लोगों ने बताया तो बारातियों का मन व्याकुल हो उठा. बारात के प्रबंधको ने इस पर अपनी सहमति जताते हुए वहीं चाय पीने की बात कहकर सभी बारात में शामिल गाड़ियों को कहकर रवाना किया गया. सबसे पहले बारात में शामिल एक टाटा सुमो पहुँची जिसमें एक क्षेत्र के प्रतिष्ठित हाईस्कूल के प्रधानाचार्य, एक प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका के पत्रकार, एक प्रतिष्ठित विद्वान व अध्यापक, एक सेना के जवान, एक प्रतिष्ठित कोचिंग के पूर्व निदेशक सहित सभी सुविज्ञ व्यक्ति ही शामिल थे, ने मंदिर की तरफ दर्शन को आगे की ओर कदम बढ़ाया. बड़े ही उत्साह से सभी लोग मंदिर को देख रहे थे और इसके बारे में उत्सुकता जाहिर कर रहे थे. तीसरी मंजिल पर पहुँचने पर बारात में ही शामिल एक सज्जन ने फोटो खींचने की अनुमति वहां लुटेरे से दिख रहे पुजारी से मांगी. इस पर पुजारी ने मना कर दिया. बारात में उपस्थित पत्रकार ने कहा कि यहां के व्यवस्थापक कौन है उनके मैं बात कर लूं अगर वे शायद अनुमति दे दें. उस पर वह पुजारी कहा यहां कोई व्यवस्थापक नहीं है सब अपने आपमें व्यवस्थापक हैं. इस पर एक बाराती ने कहा–'क्या आप लोग ठेके पर कार्य करते हैं.' पुजारी ने कहा–'हां ऐसा ही कुछ है. क्या करना तुम्हें बाहनचोद'. इस पर सेना के जवान के कहा–'आप महात्मा हो! आपके मुंह से ऐसी बाते शोभा नही देती है. आप तो समाज के द्विग्दर्शक हो!' इस पर वह पुजारी पिनक गया–'अभी मैं तुम्हें तुम्हारी अवकात दिखाता हुँ' गाली देते हुए बोला. और तुरंत कहीं फोन मिलाया और कहा कि कुछ बदमाश अंदर खुश आए हैं.इस पत्रकार ने भी हस्तक्षेप कर बात शांत कराने की पूरी कोशिश की. इस बीच बारात में शामिल 10 लोगों में कुछ लोग इस बात से अनभिज्ञ थे. इसी बीच एक अन्य पुजारी आया.

उसको पत्रकार बन्धु ने बताया कि ए क्या है? छोटी सी बात को ए अनावश्यक तुल दे रहे हैं. अरे ये हम सभी लोग यहां दर्शन करने आए है यह मंदिर हैं. यहॉ ऐसी बाते शोभा नहीं देती. अरे अगर कोई बात हो गई तो मैं उसके लिए माफी मांग रहा हुँ. उस सभ्य पुजारी ने कहा–ठीक है यार छोड़ो. ये बांदा का रहने वाला है. यह आप लोगों की बात नहीं समझ पाया होगा. दूसरे पुजारी ने पहले वाले पुजारी को समझाया झोड़ो यार. फिर सभी लोग दूसरे पुजारी के साथ जो ऊपरी मंजिल का था ऊपर देखने चले गए. और पत्रकार महोदय से बातचीत में ज्ञात हुआ कि इसके मुख्य संचालक परमश आश्रम के व्यवस्थापक है वह इस समय बनारस में हैं. इस मंदिर का इलाहाबाद, बनारस, चित्रकूट सहित कई जगहों पर आश्रम हैं. कभी–कभी आते हैं. पत्रकार बन्धु ने संचालक से मिलने की ईच्छा जाहिर की तो उसने बताया कि यहां का फोन नम्बर ले लिजिए अगले महीने आने की संभावना है. आप फोन कर पूछ लीजिएगा और आकर मिल लीजिएगा. अभी बात खत्म कर सब लोग पांचवी मंजिल पर गए ही थे कि पॉच छः साधू डंडा लिए ऊपर की ओर आए. इसी में वह तीसरी मंजिल का पूजारी भी था जिससे बात हुई थी. उसने कहा यही है(सैनिक की तरफ इसारा करते हुए)–साला, माथरचोद. जब तक लोग समझ पाते तब तक वे सोटे से सैनिक को मारने का प्रयास करने लगे. बाकी बाराती हकबक होकर रह गए. बीच बचाव करते –करते बारात में शामिल कई लोगों को चोटे लग गई. कुछ लोगों ने समझाने बुझाने का भी प्रयास किया मगर वह तो जैसे मंदिर के पुजारी नहीं बल्कि लुटेरे, गुंडा या डकैत हो. जैसे एक गुंडा अपनी सामने ऊची आवाज में बात करने या अपनी ईच्छा के विरुद्ध काम करने को अपनी तौहिन समझता है और अगले के ऊपर गुंडई दिखाने लगता है. ठीक वैसा ही उन पुजारियों का वर्ताव था. बीच बचाव करते–करते सभी मंजिल के पाठको में ताले लटका दिये गए थे. अंदर बाहर के सभी गेट भी बंद कर वहां लठैत तैनात कर दिये गए थे. जो दर्शक जहॉ थे वहीं रुक गए और इन समाज के प्रतिष्ठित पुज्य पुजारियों की रामनाम, कृष्ण नाम, विष्णु नाम रुपी जाप को त्याग कर कलयुगी बाहनचोद, माथरचोद, शाला नामक पुज्य जाप को सुनकर भावविहवल हो रहे थे. ऐसी सुंदर महात्माओं व पुजारियों की लीला शायद किसी युग में भी देखने को नहीं मिली होगी न मिलेगी. वाह क्या ईश्वर के पुजारियों की अदभुत लीला थी. अगर ऐसी ही लीला बरकरार रहीं हमारे ईश्वर व मंदिर की पुजारियों की आगे से कोई संत, सभ्य व्यक्ति मंदिरों में भगवान को दर्शन करने को भी नहीं जाएगा. खैर उनकी गालियों व सोटो की बौछार से उस सैनिक का बचाव कर वहां से किसी भी तरह निकलने में ही अन्य लोगों ने अपनी भलाई और बुद्धिमता समझी. बीच बचाव करते–करते सैनिक को काफी चोट लग चुकी थी. उसी वक्त एक सिपाही ने आकर किसी तरह वहां से निकालने में मदद की. सैनिक के नाक व सर से खून की धारा बह रही थी. इस बीच बाकी बारात के लोग भी घटना की खबर सुनकर दौड़े–दौड़े चले आए थे. उन सबका तो घटना को देखने व सुनने के बाद एक ही उद्देश्य था कि मंदिर के पुजारियों को पटक कर मारा जाए. लगभग सौ लोग बाराती सहित इतने ही लोग अन्य दर्शक भी उस स्थान पर जमा हो चुके थे. भीड़ को नियत्रित करना वहां के स्थानीय पुलिस प्रशासन के लिए भी मुश्किल होता. लेकिन बारात में शामिल प्रतिष्ठत लोगों ने बारातियों व आम जन को समझा बुझाकर जल्दी से जल्दी वहां से निकलने में ही भलाई समझी.

इधर सिपाही ने अपने कमरे मे लाकर सैनिक के घाव पर दवा लगाई और बातचीत के दौरान बताया कि ऐसा यहां अक्सर होता हैं. कई बार स्थानीय लोगों के साथ भी ऐसा हो चुका है. लेकिन यह मंदिर ऊची पहुच वाले लोगों ने बनवाया हैं. उसी सिपाही के कहने पर मंदिर का पट खोलकर सभी दर्शको को कलयुगी लूटेरे पुजारियों के चंगुल से बचाया. दर्शको के बाहर निकलते ही मंदिर के कपाट उस दिन आम दर्शको के लिए बंद कर दिए गए. कुछ लोगों ने इसे पुलिस व प्रशासन से शिकायत करने को भी कहा. मगर बात को आगे न बढ़ाकर वहीं शांत कर दिया गया. अब तो लगता है वास्तव में कलियुग के दीदार होने लगे है धीरे–धीरे. अब दिल्ली दूर नहीं है.............

लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएँ भेजें।

2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेखक का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।

3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखक का पूरा पता अंकित होना चाहिए।

4.हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं। लेकिन लेखकीय प्रति के अलावा पत्रिका की एक प्रति लेखक को भेंट स्वरुप भेजेंगें. संशोधन एवं प्रकाश्न के विषय में प्रधान संपादक का निर्णय अंतिम होगा. लेखको के विचारों से संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं हैं.

अपने विशेष रचनात्मक सहयोगियों को प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में उपहार भी भेजेंगें.

अजब दरबार है निजामुद्दीन चिश्ती का

✍अनिरुद्ध शर्मा

दिल्ली में एक प्रमुख रेलवे स्टेशन है- हजरत निजामुद्दीन। इस स्टेशन का नाम तेरहवीं सदी के विख्यात सूफी संत और विचारक हजरत निजामुद्दीन औलिया के नाम पर रखा गया है। स्टेशन के पास ही दरगाह शरीफ में उनकी मजार है। उनकी मजार के सामने ही उनके खास मुरीद अमीर खुखरो की मजार भी है।

भारत में जिन चार सूफी संतों का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है, वे हैं- अजमेर के गरीब नवाज ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, महरौली के ख्वाजा सुदबुद्दीन बख्तियार काकी, अजोदन {आज का पाकपाटन, पंजाब पाकिस्तान} के बाबा फरीद और दिल्ली के निजामुद्दीन औलिया।हजरत निजामुद्दीन की खास बात यह थी कि वे पैगंबर मुहम्मद साहब के खानदान से थे।

बाबा निजामुद्दीन का पूरा नाम हजरत सुलतानुल मशाईख महबूब-ए- इलाही ख्वाजा सैयद निजामद्दीन औलिया है। इनके दादा ख्वाजा अली बुखारी और नाना ख्वाजा अरब बुखारी बुखारा से हिंदुस्तान आए। दोनों बुजुर्ग पहले लाहौर में ठहरे और बाद में बदायूं में रहने लगे। बदायूं को उन दिनों कुब्बतुल इसलाम कहते थे। यह शहर विद्वानों और महापुरूषों का केंद्र था। बदायूं में ही ख्वाजा अली के बेटे हजरता ख्वाजा अहमद बुखारी का ख्वाजा अरब बुखारी की साहबजादी बीबी जुलेखा से निकाह हुआ। यही हजरत निजामुद्दीन औलिया का जन्म सन्१२३८ में हुआ था। हजरत निजामुद्दीन के पिता बदायूं के काजी {जज} थे, लेकिन इनकी मृत्यु तभी हो गई, जब निजामुद्दीन महज पांच साल के थे। पिता के बाद हजरत के घर की माली हालत बहुत खराब हो गई। जब किसी दिन घर में खाने का कुछ नहीं रहता था तो जुलेखा निजामुद्दीन और उनकी बहन को समझाया करती 'आज हम खुदा के मेहमान हैं' जब किसी तरह बहुत दिनों तक खाने का इंतजाम लगातार होता रहता था तो हजरत बड़े भोलेपन से मां से पूछा करते थे कि अब हम दोबारा खुदा के मेहमान कब होंगे?

हजरत के कुछ और बड़े होने पर मां ने किसी तरह इनके पढ़ने का इंतजाम किया। बहुत कम उम्र में हजरत ने अरबी पढ़ना सीख लिया और कुरान शरीफ जुबानी याद कर ली।

१८ साल की आयु में हजरत निजामुद्दीन अपनी मां और बहन के साथ बदायूं छोड़कर दिल्ली आ गए। यहां आने पर उनकी बड़े-बड़े काबिल विद्वानों और सूफी संतों के साथ संगत बढ़ गई। चार साल दिल्ली में रहनेके बाद एक दिन वे अजोदन के लिए चल पड़े। बाबा फरीद ने निजामुद्दीन को खानकाह में आते ही अपना शिष्य बना लिया। निजामुद्दीन कई महीने तक अजोदन में रहे और अपने गुरू बाबा फरीद से मुसलिम और सूफी परंपरा की समृद्ध विरासत के बारे में सीखा और समझा। इसके बाद भी निजामुद्दीन अपने गुरू के पास कई बार गए। सन् १२६५ में बाबा फरीद ने अपने निधन से पूर्व निजामुद्दीन को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

१२८० तक हजरत निजामुद्दीन कुतुबमीनार के पास रहा करते थे, लेकिन बाद में निजामुद्दीन गियासपुर में यमुना किनारे एक छोटी-सी खानकाह बनाकर रहने लगे। जैसे-जैसे इनकी ख्याति, फैलने लगी इनकी खानकाह में हजारों लोग उपदेश सुनने तथा आर्शीवाद लेने आने लगे। हर कोई निजामुद्दीन के दरबार में अपनी मुराद लेकर आने लगा, पर इनके दरबार में आकर कोई भी खाली नहीं लौटता था। यहां बाबा निजामुद्दीन ने करीब ५५ साल गुजारे।

दरगाह शरीफ के चारों ओर इंडोइसलामिक वास्तुकला के बेजोड़ नमूने देखने को मिलते हैं। मजार, मसजिद और पूरा परिसर का मूल ढांचा सात सौ साल पुराना है। निजामुद्दीन की दरगाह का निर्माण खली उल्लाह ने करवाया था। पहले यहां आने वाले यात्रियों के दुआ मांगनेकी जगह लाल पत्थर की ऊबड़खाबड़ जमीन थी, लेकिन अब से करीब चार दशक पहले यहां संगमरमर लगता दिए गए। आज जहां निजामुद्दीन की दरगाह है, उसके बगल में एक मसजिद है। मसजिद की स्थापना अलाउद्दीन खिलजी ने की थी।

दरगाह में आने वाले लोग निजामुद्दीन और अमीर खुसरो की मजार पर गुलाब के फूल चढ़ाते हैं और सुगंधित अगरबत्तियां जलाते हैं। हर वीरवार को यहां कव्वाल निजामुद्दीन के प्रिय शिष्य अमीर खुसरो की लिखी कव्वालियां गाते हैं। आज निजामुद्दीन की मजार पर हर रोज सैकड़ों श्रद्धालु अपनी मुराद लेकर आते हैं और मन्नत मांगकर जाते हैं। दरगाह के चारों ओर की जालीदार दीवार पर लोग मन्नत मांगने के लिए लाल-पीला धागा बांध जाते हैं। मुराद पूरी होने पर वे एक बार फिर निजामुद्दीन के दरबार में हाजिर होते हैं।

स्नेह लघु कथा

आदमी और दरिंदा

धनश्याम अग्रवाल

इस बस्ती से उस बस्ती तक, और उस बस्ती से इस बस्ती तक, पहले अफवाहें फैलती, फिर ख़बरे आती, नतीजान दंगे भड़कते. अफवाह के फैलते ही स्कूलों की छुट्टी हो गई. ख़बर के आते-आते सारे बच्चें अपने-अपने घरों में पहुंच गए. बड़े बच्चें खुद चले गए तो छोटों को उनके माता-पिता ले गए. चार बरस का लोअर के.जी. का एक बच्चा वहीं रह गया. उसे लेने अब तक कोई नहीं आया था. छुट्टी की खुशी उदासी में बदल गई. उसने इधर-उधर देखा कोई नहीं था. बच्चा रोते-रोते अकेलाही अपने घर की उन सड़कां को याद करता हुआ निकल पड़ा, जिन सड़कों से वह कभी ऑटो सें तो कभी अपने चाचा के साथ स्कूटर से स्कूल जाता था.

दंगा पूरी तरह भड़क चुके था. शहर में सन्नाटा-सा था. सड़के सुनसान हो तो उनकी शक्लें एक जैसी हो जाती हैं. वह रास्ता भटक गया और एक बहशी गली में मुड़ गया. दंगा दूरे उफान पर था. नारे लगाते वहशियें के झुंड इधर से उधर गलियों में दौड़ रहे थे. मारे डर के वह भी एक ओर तेजी से भागने लगा. तभी वहशियों का एक जत्था उसकी ओर बढ़ा. भीड़ में एक शोर उठा-"वह जा रहा हैं संपोला. छोड़ो मत. मारों साले को. मारो....मारो...... बच के न जाए." की आवाज सुन बच्चा बुरी तरह कॉपने लगा. उसकी घिग्गी बंध गई. दरिदों ने उसे घेर लिया था. "अं....क......ल" कहते हुए वह एक बहशी की ओर बढ़ा. पर अंकल पर तो जुनून सवार था. उसने बच्चें को उठायाा और एक नारा लगाते हुए. सड़क पर तेजी से आते हुए एक ट्रक के सामने बच्चे को फेंक दिया. एक चीख को चीरता हुआ ट्रक तेजी से चला गया.

"खून का बदला खून. तुम एक मारोंगे तो हम दस मारेंगें." जैसे नारे लगाते हुए वह जत्थे के साथ आगे बढ़ गया. एक गर्व मिश्रित इतमिनान के साथ. उसने दंगों की मैच में एक गोल कर अपनी टीम को बढ़त जो दिला दी थी. धीरे-धीरे भीड़ छंटने लगी तो वह दरिदों से कुछ-कुछ आदमी होना शुरु हो गए. घर आते-आते वह बिल्कुल अकेला रह गया. पूरी घटना उसकी आंखों के आगे घूमने लगी. बच्चे का घिरना, उसका कांपना, अं....क....ल कहते हुए बच्चे का उसकी ओर बढ़ना और फुटबाल की तरह बच्चें को ट्रक के सामने उछाल कर फेंकना. यह सब उससे कैसे हो गया? बच्चे ने उसे ही अं.. .क...ल क्यूं कहा? क्या बच्चाा उसे जानता था? और उसे पहले की एक घटना याद आ गई. वह सिहर उठा.

आज के तकरीबन दो ढ़ाई साल पहले वह सड़क के किनारे यूं ही भटक रहा था कि उसने देखा, एक डेढ़-दो साल का बच्चा अकेला सड़क पर आ गया था. इसके पहले कि वह आते हुए ट्रक की चपेट में आता, अपनी जान की परवाह किए बिना उसने दौड़कर बच्चें को सड़क से खींच लिया था. उसे काफी चोट भी आई थी. एक सेकिन्ड की भी देरी होती तो.... उसकी इस बहादुरी पर कलेक्टर ने उसे १०००/- का ईनाम दिया था. हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल के रुप में उसका नाम लोकर अख़बार में छपा था. ऐसा ही कुछ-कुछ याद आते ही वह उल्टे पांव सड़क की ओर तेजी से दौड़ा. खून से लथपथ बच्चे की लाश अब भी वहीं पड़ी थी. उसने लाश को गौर से देखा. उसके मुंह से एक चीख निकली.

ये वहीं बच्चा था जिसे उसने दो-ढाई वर्ष पहले ट्रक से कुचलने से बचाया था. अब वह बच्चें से लिपटकर आदमी तरह फूट-फूटकर रोने लगा.

ग़ज़ल

ज़िन्दगी में मुस्कराना सीखिए
आप गिरतों को उठाना सीखिए
ज़िन्दगी है पास आना सीखिए
चिलचिलाती धूप है चारों तरफ
धूप में ही पग बढ़ाना सीखिए
क़ातिलों के सर कुचने के लिए
न्याय का परचम उडाना सीखिए
'इन्दु' के गर साथ रहना चाहते
आग खुद दीप में लगाना सीखिए

चन्द्रशेखर झा 'इन्दु',
संपादक, परिकल्पना, कस्तूरबा गाँधी नगर, नया बाजार, पंजाबी मुहल्ला, लखीसराय, बिहार

ग़ज़ल

हर तरफ हैवान है, शैतान हैं
आज दुनिया में कहां इंसान हैं
वीर वह है जो समय को मात दें
लोग कहते हैं समय बलवान हैं
कब तलक तुम जुल्म सहते जाओंगे
जुल्म सहना जुल्म की पहचान हैं
निर्धनों तुमसे बड़ा धनवान कौन
दे दिया तुमने जो मत, वह दान है
झोपड़ी में रहने वाले खुद को जान
कोठियों वालों का तू अरमान हैं
तेरी सांसे लहलहाती खेतियां
सारे हिन्दुस्तान की तू जान हैं
'रचश्री' पक्का इरादा हो अगर
काम कुछ मुश्किल नहीं आसान हैं.

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव,
एल.आई.यू., कोतवाली कैम्पस, फतेहगढ़, उ.प्र.

मंगलमय हो!

हो तन मन में समता का भाव
घृणा द्वेष का उर से क्षय हो।
रण छोड़ भगें दानव वृत्तियां
सत्य, क्षमा, समता की जय हो।।
प्रेम, शान्ति, पुरुषार्थ जगे फिर
नव धर्म अभय अक्षय हो
हम आप सभी जड़ चेतन जग को,
नव संवत सर मंगलमय हो
'नववर्ष मुबारक हो' की जय हो,
'हैप्पी न्यू ईयर' की क्षय हो
हिन्दी, हिन्दू, हिन्दोस्तॉ को,
नव संवत सर मंगलमय हो

भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय'
चकपैगम्बर पुर, सिधॉव, फतेहपुर

अमर वाणी–

मूर्ख मालिक का होना, अपनी भार्या का कपटी होना, सदा रोगी रहना ये सब जीवित पुरुषों का मरण ही है.

वाणभट्ट

बस्ते का बोझ

हम छोटे–छोटे, नन्हें–मुन्ने,
कब तक ढोयें रोज–रोज।
कम क्यों नहीं होता है आखिर,
बढ़ता ये बस्तों का बोझ।।
हैं खेलने–खाने के दिन,
क्यों नहीं हमारी सुनता,
बस होता ये हमें अफसोस।।
कम क्यों नहीं होता है आखिर,
बढ़ता ये बस्तों का बोझ।।
बंद हुआ है खेल हमारा,
टी.वी. देखना और घुमना।
आजादी हुई है कैद हमारी,
जबसे लगा पढ़ाई का रोग।।
बहुत हुआ अब सहते–सहते,
कम करों बस्तें का बोझ।।

रामचन्द्र राठौर,
ग्रा. पो., घुसी, शाजापुर, म.प्र.

क्या आप परिचित है–

✍ कु0संस्कृति द्विवेदी

☹संसार का सबसे बड़ा डेल्टा कौन सा है? यह कहाॅ हैं?
☺संसार का सबसे बड़ा डेल्टा सुंदरवन है जो भारत के पश्चिमी बंगाल राज्य तथा बांग्लादेश के मध्‍य स्थित है.
☹भारत ने ओलम्पिक खेलों में सर्वप्रथम कब भाग लिया?
☺स्वतंत्र रुप से भारत ने सन् 1928 में एम्सटर्डम (हॉलैण्ड) ओलम्पिक में भाग लिया था. जहॉ उसे हॉकी में स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ. इससे पूर्व सर्वप्रथम एक भारतीय नगारिक नार्मन जी. पिटचार्ड ने ब्रिटिश टीम के अंग के रुप में पेरिस ओलम्पिक (सन् 1900) में भाग लिया था. पिटचार्ड को एथलेटिक्स में दो रजत पदक प्राप्त हुए थे.
☹ भौतिकी में प्रथम नोबेल पुरस्कार किसको प्रदान किया गया?
☺भौतिकी में प्रथम नोबेल पुरस्कार जर्मन वैज्ञानिक डब्ल्यू.के. रॉन्जन को सन् 1901 में एक्स–किरणों की खोज के लिए प्रदान किया गया था. नोबेल पुरस्कार प्रदान करना सन् 1901 से ही प्रारम्भ हुआ था.
☹ रसायन विज्ञान में प्रथम नोबेल पुरस्कार किसे प्रदान किया गया?
☺रसायन विज्ञान में प्रथम नोबेल पुरस्कार हॉलैण्ड के रसायन वैज्ञानिक जे.एच.वांट हॉफ को सन् 1901 में प्रदान किया गया था.
☹ भारत व जापान के सहयोग से मस्तिष्क ज्वर हेतु टीका कहॉ तैयार किया जाता है?
☺ जापानी एन्सिफलाइटिस (मस्तिष्क ज्वर) की रोकथाम के लिए भारत व जापान सरकार के समझौते के तहत कसौली के सी. आर. आई में एक टीका तैयार किया गया हैं जिसके फलस्वरुप इस रोग से मरने वालों की संख्या में भारी कमी आई हैं.

प्यारे दोस्तों हम प्रत्येक अंक में आपको एक कहॉनी/ कविता/ जानकारी भरे अन्य महत्वपूर्ण जानकारिया देते रहेंगें. हमारा यह नया स्तम्भ आपको कैसा लगा ? हमें अवश्य लिखें.
आपकी दीदी रींकी

स्नेह बाल प्रतियोगिता–२

प्यारे बच्चों यह ईनामी प्रश्न प्रतियोगिता आपके लिए हैं. इस प्रतियोगिता में 12 वर्ष तक की उम्र का कोई भी बालक/बालिका भाग ले सकता है. आप इन प्रश्नों के उत्तर हमें 30 जनवरी तक साधारण डाक से भेजें. सभी प्रश्नों के सही हल बताने वाले ढेरों ईनाम दिए जाएगें.

प्रश्न निम्न है–

प्रश्न 1. दूरदर्शन का आविष्कार किसने किया था?
प्रश्न 2. कौन–सा विटामिन सूर्य के प्रकाश से प्राप्त होता है?
प्रश्न 3.संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्यालय कहॉ स्थित हैं?
प्रश्न 4.'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' किसने कहा था?
प्रश्न 5. विश्व के प्रथम कृत्रिम उपग्रह का क्या नाम हैं?
प्रश्न 6. विश्व पर्यावरण दिवस किस दिन मनाया जाता हैं?

प्रश्न 7.राष्ट्र ध्वज में बने चक्र में तीलियों की संख्या कितनी हैं?
प्रश्न 8. सबसे बड़ा महासागर कौन सा हैं?
प्रश्न 9.किस नदी पर फरक्का बॉध बनाया गया है?
प्रश्न 10. दो केन्द्र शासित प्रदेशों के नाम लिखो?

नीचे दिये गये कूपन को साथ में अवश्य भेजें–

कूपन

प्रतियोगी का नामः.................................
पिता का नाम :.......................................
उम्रः.................... कक्षाः ....
स्कूल का नामः.......................................
पताः ....

बिल गेट्स

28 अक्टूबर 1955 को वाशिंगटन में जन्में विलियम हेनरी गेट्स स्कूल में विज्ञान और गणित में सबसे तेज छात्र माने जाते थे. इन्होंने हारवर्ड विश्वविद्यालय से शिक्षा ली. 38 वर्ष की उम्र में मेलिंड फ्रेंच से शादी किया जो इस समय माइक्रोसाफ्ट में प्रोडक्ट मैनेजर हैं. उनकी एक बेटी जेनिफर कैथरीन और एक बेटा रोरी जॉन हैं. उनके परिवार की प्रतिष्ठा धनी व्यापारी और सामाजिक कार्यो में रुचि लेने वाले परिवार के तौर पर थी.

सॉफ्टवेयर में कैरियर बनाने के लिए इन्होंने हारवर्ड विश्वविद्यालय को छोड़ दिया. लेकसाइट स्कूल में सबसे पहले उनका सामना कम्प्यूटर से हुआ. उसके बाद अपने दोस्तों के साथ मिलकर कम्प्यूटर सेंटर कारपोरेशन नामक कंपनी के कम्प्यूटर व सिक्योरिटी सिस्टम की हैंकिग भी की. आगे चलकर इसी कंपनी ने उन्हें व दोस्तों को वाइरस ढूंढने व बेहतर सिक्योरिटी सिस्टम बनाने के लिए इनसे अनुबंध भी किया. अपने दोस्त पॉल एलेन के साथ मिलकर माइक्रोसाफ्ट कंपनी की शुरुआत 1970 में की. 1983 में दोस्त ने कंपनी छोड़ दी फिर अकेले के दम पर माइक्रोसाफ्ट को दुनिया में नंबर वन पर पहुंचाया. इस समय वे दुनिया के सबसे ज्यादा धनी लोगों में से हैं. कई बार उनकी संपति 75 बिलियन डॉलर से भी आगे निकल चुकी हैं.

बधाई हो

विश्व स्नेह समाज की पूर्व सहायक संपादिका एवं वर्तमान वैयक्तिक सहायक प्रधान संपादक मिस सीमा मिश्रा के गोरखपुर जनपद के श्री सोनू तिवारी के साथ परिणय सूत्र में बंधने पर विश्व स्नेह समाज परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

पत्रिका के ही देवरिया सदर के ब्यूरो पुष्पेन्द्र कुमार दूबे पुत्र स्व० ओंकार नाथ दूबे के निरज दूबे के साथ परिणय सूत्र बधने पर हार्दिक बधाई

भावुक जी द्विवेदी
(डॉ. अंजनी कुमार दुबे 'भावुक)

2 अक्टूबर 1959 को ग्राम व पोस्ट यूसुफपुर, खड़वा, मालिकापुरा, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश में श्री मुन्नी दुबे व माता श्रीमती सुघरा देवी के कोख से जन्में भावुक जी द्विवेदी की शिक्षा महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उ.प्र. में हुई. वहीं से इन्होंने 'आज का परिवेश और समकालीन हिन्दी कविता' विषय पर शोध किया.

लेखनः कविता, गीत, कहॉनी, नाटक, आलोचना, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लगभग 500 कवितायें, गीत, गज़ल प्रकाशित/कहानी और आलोचना लगभग 100, पत्रिकाओ में प्रकाशित.

प्रसारणः आकाशवाणी तथा दूरदर्शन, सिलचर तथा वाराणसी, दिल्ली से कवितायें, कहॉनियॉ तथा समीक्षा प्रसारित. कविता, कहॉनी, व आलोचना में एक राष्ट्रीय पहचान.

प्रकाशनः 1. देशवाली, कविता संग्रह, 1991, गौहाटी
2. मन की बॉसुरी, सम्पादित कविता संग्रह, 1999, वाराणसी
3. मॉ बॅढ़ी किसकी, कविता संग्रह, 2000, वाराणसी
4. मार्क्स का जूता, कहानी संग्रह, 2000, इलाहाबाद
5. समकालीन कविता के विविध आयाम, आलोचना, 1998,
6. दंगा, नाटक, 2002, वाराणसी
7. साधना के दीप, 2002, नई दिल्ली

प्रकाशनाधीनः 1. गीतः मन के मीत, असतो माम् सद्‌गमय्–नाटक, तराइन का अंतिम युद्ध–नाटक, परिवेश और साहित्य–आलोचना, मणिका और माला–उपन्यास, महाकवि तुलसी–उपन्यास, पीपर पात–ललित निबंध, रंगमंच और फिल्मों से सम्पर्क 1980 से 1987 तक.

सम्पादनः पूर्वोदय–त्रैमासिक, बराक प्रिया–त्रैमासिक, सिलचर –अनियत कालिक, हिन्दी स्वर्ण जयन्ती स्मारिका–2000

सम्मानः नागरीलिपी सम्मान–1994, शिक्षा श्री सम्मान–1995, साहित्य श्री सम्मान–1995, काव्यभूषण सम्माना–1999,

पाठ्यक्रमः पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, जे.एन.यू., नई दिल्ली–96

भागीदारीः पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, बी.एच.यू., वाराणसी अभिविन्यास पाठ्यक्रम, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

वर्तमान सम्पर्कः प्रवक्ता, हिन्दी, नेहरु कॉलेज, पोस्ट– पैलापुल, जिला–कछार, असम–788098

दूरभाषः 03842–284552, नि–284781

दूसरे के व्यवहार को समझे

हम उस तरह नहीं रह सकते जैसे समुद्र में अकेला द्वीप होता है. हम लोगों से आपसी व्यवहार करते हैं. कभी धार्मिक समारोह में या सामाजिक समारोह में या व्यक्तिगत रुप से जाकर हम आपस में मिलते–जुलते हैं. इससे व्यवहार बढ़ता है

अगर हमें किसी एक लक्ष्य के लिए काम करना है तो एक दूसरे को जानना और मिल–जुलकर काम करना अच्छा होगा. हमारे लिए यह बेहतर होगा. अगर अपने रिश्तों को खराब करने वाले कारणों को हम पहचानें और उनका समाधान खोजने की कोशिश करें. इस तरह हम अपनी सामाजिक और निजी जिंदगी को बेहतर बना सकते हैं.

कड़वी बातचीतः लोग बातचीत में कड़वाहट को ही रिश्ते खराब होने का कारण मान लेते हैं. लेकिन यह कारण न होकर केवल उसका लक्षण होती है.

प्रेरणाः आपसी समस्याओं का एक कारण प्रेरणा का अभाव भी होता हैं. किसी संगठन में अगर कर्मचारियों में देर से आने की आदत है या खूब छुट्टी पर रहते हैं, अपना काम समय पर नहीं करते हैं तो जरुर उनमें प्रेरणा की कमी हैं. उनका छुट्टी पर रहना, मिलकर काम न करना आदि सहयोगियों से उनके संबंधो को बिगाड़ता हैं. वजह मानी जाती है काम पर न आना. जबकि वजह होती है काम पर आने के लिए प्रेरणा की कमी. लेकिन गलतफहमी में आपसी संबंध कड़वे होते हैं.

विरोध करनाः हर बात में विरोध करना भी आपसी संबंधों के खराब होने का लक्षण हैं.

समझौते करनाः समझौते की जड़ में आपसी संबंधो में कड़वाहट होती हैं. क्योंकि यदि आप एक दूसरे से अच्छे संबंध रखते हैं तो आपकी बात न मानने का सवाल हीं नहीं उठता. संबंधो को सही करने के उपाय है–

दूसरे को सुनेः दूसरे को सुनना अपने संबंधो को सही करने में बहुत सहायक होता हैं. किसी संगठन को अगर किसी निर्णय पर पहुंचना हैं, तो सभी सहमति से एक बात पर निर्णय दें यह जरुरी हैं. दूसरे के विरोध को सुनना उसे समझना कोई खराब बात नहीं हैं. इससे आपसी भागीदारी की भावना बढ़ती हैं.

अच्छा नेता बनेंः एक टीम का लीडर हो या फिर परिवार का मुखिया हर किसी के लिए आपसी संबंध अच्छे बनाना जरुरी हैं. इसके लिए जरुरी है कि आप अपने परिवार या टीम के सदस्यों से उनकी राय लेते रहें. अपने आपको एक बेहद कड़क आफिसर या मुखिया की छवि देना आपके लिए हानिकारक होगा. आपके संबंध भी इससे खराब होगें.

लोगों को समझनाः अगर आपने संगठन में बिना संबंध खराब किये आपको हर एक कर्मचारी से काम करवाना है या अपने परिवार में हर सदस्य से आपको अपने संबंध अच्छे रखने हैं तो बेहतर है कि आप उन्हें समझने पर ध्यान दें. उनसे बात करके उनकी क्षमताओं और योग्यताओं का आकलन करें. उनकी दिक्कतों को समझने की भावना आपकी मदद करेगी.

दूसरे को शामिल करनाः हमारी पहली आवश्यकता है लोगों के बीच रहना, उनके मिलना–जुलना. यह पहचाने कि दूसरा व्यक्ति किन स्थितियों में सहज महसूस करता है.

संतुलनः आपसी रिश्ते जरुरी हैं. लेकिन इनको सही बनाने के लिए अपने पद से समझौता न करें. अपने अधिकारों व खुलेपन का सही संतुलन बनाकर भी अपने संबंध मधुर बनाए जा सकते हैं.

मधुर व्यवहारः अपने व्यवहार में मधुर भावना का प्रदर्शन करना भी आपके रिश्तों के लिए मदद देता हैं.

इस तरह आपसी संबंधो को सरलता से चलाने के लिए सबसे जरुरी है कि हम दूसरे के व्यवहार को समझें. फिर उसी प्रकार से अपना व्यवहार करें.

साहित्य श्री तथा समाजश्री.०४ हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं

हिन्दी मासिक पत्रिका **"विश्व स्नेह समाज"** ने जी.पी.एफ.सोसायटी के सहयोग से इस वर्ष रचनाकारों व समाज सेवियों को प्रोत्साहित करने हेतु साहित्य श्री व समाज श्री से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसमें 5000/–रुपये का नगद पुरस्कार व प्रमाण–पत्र तथा 10 अन्य रचनाकारों अन्य सम्मानों से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसके अलावा शिक्षा क्षेत्र कें के लिए **ओकारनाथ दूबे स्मृति सम्मान** व पुलिस सेवा के लिए **केदार नाथ दूबे स्मृति सम्मान** प्रदान किएं जाएगें. यदि कोई अन्य सम्मानीय व्यक्ति अपने संस्थान या व्यक्ति विशेष के नाम पर पुरस्कार देना चाहते हैं तो कृपया नीचे लिखे पते पर लिखे

इसमें रचनाकारों को फोटो परिचय सहित कोई भी दस रचना मौलिकता के प्रमाण–पत्र के साथ भेजना होगां तथा समाज सेवियों को छाया परिचय सहित समाज सेवा में पॉच वर्षो में किये गये योगदान की विस्तृत रिर्पोट सहित प्रविष्टि **15 फरवरी 2005** तक आमंत्रित हैं. प्रवेशियों को स्टेशनरी, डाकव्यय सहित 100रुपये प्रवेश शुल्क अपेक्षित है. शुल्क मनिआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट 'विश्व स्नेह समाज' के नाम से देय होगा. प्रविष्टि अपनी प्रविष्टिया **हमें निम्न पते पर भेजें**:–

सम्पादक, मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

नववर्ष, क्रिसमस एवं गणतंत्र दिवस पर सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ

शिक्षा के शिरमौर: कमलेश सिंह

समाज में कोई क्रांति लाने व पवित्र कार्य करने वाली महान विभूतियां यदा–कदा ही इस धरती पर जन्म लेती है. भारत की पवित्र धरती पर कोई न कोई संत समाज में क्रांति लाने के लिए अवतरित होते रहते हैं. समाज के विकास की डोर शिक्षा पर ही टिकी होती हैं. जब तब हम शिक्षित नहीं होगे हमारा समाज देश विकास नहीं करेगा. शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए कमलेश सिंह के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता हैं.

अपने पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कर्तव्य परायण, सादा जीवन और उच्च विचारो वाले स्व0 जगपत सिंह सिंगरौर द्वारा 1964 में मकनपुर गांव में गिरधारी सिंह जूनियर हाईस्कूल की कड़ी को इतना अधिक फैला दिया कि आज यह शिक्षा का सिरमौर साबित हो रहा हैं. अपने पिता के इस छोटे से बीच को अमली जामा पहनाया उनके यशस्वी एवं कर्मठ तथा बात के धनी पुत्र कमलेश सिंह ने. सुलेमसराय की खाली जमीन पर फैले अंधियारें को गौर से परख कर महान विभूति कमलेश सिंह ने जगपत सिंह सिंगरौर बालिका इंटर कॉलेज एवं जगपत सिह सिगरौर डिग्री कॉलेज की स्थापना की जो इलाहाबाद मंडल का एक ख्याति प्राप्त संस्थान हो गया हैं. इस कॉलेज की पूरे प्रदेश में अपनी एक अलग पहचान हैं. यहां लगभग दस हजार छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं. कॉलेज के प्रबंधक श्री कमलेश सिंह के कुशल नेतृत्व में यह कॉलेज नित नयी ऊँचाईया छू रहा हैं.

इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए कानपुर विश्वविद्यालय से बी.एड. पाठ्यक्रम भी इस पिछले सत्र से प्रारम्भ हो गया हैं. कम्प्यूटर शिक्षा के लिए एन.आई.आई.टी, सी.ए.टी.एस. का प्रशिक्षण संस्थान भी जे.पी.नगर में चलाया जा रहा हैं.

पूर्वांचल के महान विभूति श्री कमलेश सिंह इंजीनियरिंग कॉलेज, जे.के. एस.एस इंस्टीट्यूट ऑफ कम्प्यूटर सांइस, प्राविधिक विश्वविद्यालय लखनऊ, उ.प्र. से कागजी कार्यवाहियों को अमली जामा पहनाने में लगे हुए हैं. शायद अगले सत्र से यह प्रारम्भ भी हो जाए. श्री सिंह की शिक्षा के प्रति लालसा अभी यहीं खत्म नहीं होती वे आगे इलाहाबाद के प्रथम निजी मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए भी प्रयासरत हैं. इसके लिए वे जमीन की खरीददारी भी कर रहे हैं. इलाहाबाद जो कभी टकासेर भाजी और टकासेर खाजा के लिए प्रसिद्ध था वहॉ शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए एक से एक व्यवस्था व साधन संस्थान देने वाले जे.पी.ग्रुप के चेयरमैन श्री कमलेश सिह को शिक्षा का सिरमौर कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी.

उच्च शिक्षा के बारे में गहन अध्ययन और चिन्तन के लिए कमलेश सिंह सदैव प्रयासरत रहे हैं. इसके लिए वे विगत वर्षो में रुस, कनाडा और फिनलैण्ड की यात्रा भी किए और वापस लौटकर यात्रा के दौरान मिले अनुभवों को शिक्षकों और छात्रों के बीच बॉटने का काम भी किए. श्री कमलेश सिंह के कुछ खास विचार है–

1. नौजवानों को त्रिशुल दीक्षा नहीं, बल्कि बेहतर शिक्षा चाहिए.
2. आज के समय में धर्म नहीं भाई चारा, मानवता संकट में हैं.
3. भूख और गरीबी से त्रस्त जनता और बेरोजगार युवाओं को भ्रमित करने के बजाय धर्म में रुचि रखने वाले को शिक्षा के प्रसार, समाज को विभाजित करने वाली जाति व्यवस्था और अज्ञानता से लड़ने में अपनी शक्ति लगानी चाहिए.

अभी कुछ दिनों पहले इस व्यक्ति व संस्था को बदनाम करने के लिए कुछ लोग उनके ऊपर आक्षेप लगाते रहे हैं. ऐसा व्यावसायिक व राजनीतिक कारणों वश किया गया हैं.

Advt. dec04/15

भाग–2

जायज़ कमाई

✍अभिनव ओझा

लॉटरी के उसी साम्राज्य की एक छोटी सी दुकान पर राजू ने सत्ता गिना और जेब में रखते हुए कल्लू ेस कहा, "चाय पिला." कल्लू जिसने पच्चीस बसंत इसी उम्मीद से देखे थे कि एक दिन वह वैभव और ऐश्वर्य का अपना एक महल बनते देखेगा, ने पान चबाते हुए कहा, "ठीक है बे. अभी तू मुझसे चाय पी ले मगर याद रखना, अगर आज सत्ता खुल गया तो मुर्गा खिलाना पड़ेगा. " राजू ने जवाब दिया, "ठीक है, ठीक है. तब की तब देखी जाएगी. अभी तो चाय मॅगा." इतने में विनोद आता दिखाई पड़ा. विनोद तिगड्डे का तीसरा इक्का था. बाकी दो राजू और उस्मान थे. तीनों की धमाचौकड़ी पूरे मुहल्ले में मशहूर थी. चोली दामन का यह साथ बचपन से था. तीनों अलग–अलग घरों में रहते हुए भी एक साथ पकवान चढ़े थे. वे एक दूसरे के सहयोगी और हमराज़ थे. बीस चौबीस वर्ष के दरम्यान के ये तीनों दोस्त एक ही सिद्वान्त के कायल थे कि कम से कम मेहनत में ज्यादा से ज्यादा बरकत हो सके.

विनोद के बाप अमरनाथ की मिठाईयों की दुकान थी. पूरे गुट में सबसे संपन्न परिवार विनोद का ही था फिर भी वह हमेशा तंगी में में रहता था. इसकी वज़ह यह थी कि अमरनाथ महीने के जेबखर्च के अतिरिक्त विनोद को एक पैसा फालतू नहीं देता था. वह यह बात अच्छी तरह जानता था कि जवान लड़के के हाथ में जरूरत से ज्यादा एक रूपया रखना पागल के हाथ में ढेला थमाना है. रेत का महल गिरने और जवानी के पैर फिसलने में अधिक वक्त नहीं लगता.

विनोद आया और आते ही काउॅटर पर दोनों कुहनी टिका कर टिकटों का गौर से देखने लगा. जिस तरह कोई रूपसी श्रंगार के बाद दर्पण में अपनी छविइ देख कर फूली नहीं समाती, उसीतरह रंगीन, करारे टिकटों को निहारते हुए विनोद गद्गद् हो जाता था. उसे लगता जैसे वे टिकट नहीं, उसकी जन्म कुंडली की फोटोकापियॉ हैं. तकदीर खुलने में बस उन पर तारीख और मोहर लगने की देर है.

विनोद ने कल्लू से खुशामदी लहज़े में कहा, "कल्लू यार. जरा धनलक्ष्मी का पॉच नहला तो निकाल. आज नहला लकी है. लेकिन पैसे कल से लेना, आज तो जब में फूटी कौड़ी नहीं है. " कल्लू अपनी किस्म का एक ही था. धंधे में दोस्ती करना उस्ताद ने नहीं सिखाया था. दांत निरोरते हुए बोला, "यारों के लिए जान हाज़िर है, लेकिन धंधे में मुरौवत नहीं. जा यार काम कर, सुबह–सुबह उधार की लाठी मत मार." विनोद कुछ तल्खी से बोला, "तुम तो ऐसे बोल रहे हो जैसे हम पहली बार मिल रहे हों कोई कहीं भागा जा रहा है क्या?"

कल्लू भी कच्ची गोलियॉ नहीं खेला था. इस बार संजीदगी से बोला, "भागने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता मेरा यार. सौ की सीधी एक बात है कि बोहनी का समय है, परता नहीं पड़ता. " राजू ने, जो अब तक मौन रहकर दोनों का वार्तालाप सुन रहा था, विनोद का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा और कहा, "छोड़ यार, ले बीस रूपए मुझसे ले," हालांकि राजू के पास उस वक्त पैसे थे नहीं.

विनोद ने हाथ छुड़ाते हुए कहा,"अब मुझे टिकट लेना ही नहीं है. लेकिन आज एक बात सीना ठोंक कर कहता हूॅ कल्लू, कि अगर इनामी फॅसा कर सौ सौ के सौ नोट तुमसे गिनवा कर अपनी इसी हथेली पर न रखवाए, तो मेरा नाम बदल देना." कल्लू ने मुस्कराते ुए कहा, "जा जा, हवा आने दे." विनोद तिलमिला कर कुछ कहने ही वाला था कि राजू ने दाऍ हाथ से उसका कंधा दबोचा और उसे जबर्दस्ती खींचता हुआ आगे बढ़ गया. कुछ देर साथ–साथ चलने के बाद राजू ने कहा, "चल भारत टॉकीज का एक चक्कर मार कर आजे हैं." और फिर सरस्वती गर्ल्स इंटर कॉलेज का टाइम भी हो गया था.

आज धर्मपाल बेचैन था. रह–रह कर राजू की बेशर्मी और दुस्साहस उसके दिलोदिमाग़ को मथ रहे थे. एक ओर हवली–सरकारी मधुशाला का वह हलाहल जिसे आज तक कोई नीलकंठ नहीं रोक सका था, और दूसरी तरफ लॉटरी–जुए का वीभत्स रूप. इन दो पाटों के बीच उसे अपने राजू का कुम्हलाया, रक्त रंजित चेहरा पिसा हुआ नज़र आता. राजू उसके परिवार का इकलौता चिराग़ उसकी ऑख का तारा और दिल का टुकड़ा था.

आज कमाई भी खास नहीं हुई थी, बावजूद इसके कि ग्राहक बराबर आते रहे थे. आखिर ऊब कर धर्मपाल कुछ जल्दी ही घर पहुॅच गया. ठेला लुढ़का कर वह अंदर आया और चटाई पर पलथी मार कर बैठ गया. कजरी पन्ना के घर जाने को तैयार थी. धर्मपाल ने बीड़ी जलाते हुए सवाल दागा, "राजू आया था?" कजरी सपाट, भावहीन स्वर में बोली, "हॉ, जैसे रोज खाना खाने आता है, उसी तरह आज भी आया था. खाया और चलता बना." राजू सुबह से घर नहीं आया था, लेकिन कजरी धर्मपाल की चिंता और बढ़ाना नहीं चाहती थी.

चाय का गिलास धर्मपाल को पकड़ाकर कजरी चली गई. चाय पीते हुए भी वह इसी उधेड़बुन में पड़ा रहा कि रजुआ

के बहकते कदमों पर कैसे अंकुश लगाया जाए.
भारत टॉकीज़ का राउंड मार कर राजू और विनोद ने सरस्वती गर्ल्स इंटर कॉलेज और उस तक पहुँचने वाले सभी रास्तों का सूक्ष्मता से अवलोकन किया. स्कूल जाती छात्राओं पर अपने–अपने निष्पक्ष विचार व्यक्त किए, एकाध को बासी शायरी से सम्बोधित किया और सीधा रेलवे प्लेटफॉर्म की राह पकड़ी जो उनका प्रिय अड्डा था. धनश्याम चायवाला पुराना परिचित था. एक में दो चाय पीते सहसा राजू का ध्यान उसकी ओर पीठ किए एक आकृति की ओर आकर्षित हुआ जो नीचे झुकी शायद जूते का फीता बाँध ा रही थी. चौड़े कंधे और घुँघराले बालों को पहचानने में राजू को पॉच सेंकड भी नहीं लगे. 'गुरू', उसके मुँह से निकला. आकृति घूमी और छेनू की चमकीली ऑखें जमीन से छह फूट की ऊँचाई पर टिमटिमाती नज़र आई. गेहुँवा रंग, नुकीली नाक ओर घनी मूँछ में छेनू जॅच रहा था. सुगठित शरीर और सजीले कपड़ों में छेनू अपनी अड़तीस साल की उम्र से कहीं कम लग रहा था. उसकी गर्दन पर तकरीबन चार इंच लम्बा निशान इस बात का गवाह था कि छेनू गुरू अपने ज़माने का माना हुआ चाकूबाज था. लोगों का कहना था कि पिछले करीब नौ साल से छेनू ने मार पीट का धंधा छोड़ दिया था और शादी कर ली थी. उसका उठना बैठना भी अब ऊँचे लोगों के साथ होता था. नई बस्ती उसका पुराना आशियाना था. अपने हम उम्र साथियों में छेनू भाई और नई उमर के लौडों में छेनू गुरू के नाम से जाना जाता था. छेनू दादा उसका पुराना नाम था.
छेनू गुरू ने ही राजू को लॅाटरी का चस्का लगाया था. आज वह खुद न खेल कर लड़कों को लॉटरी खिलाता था. उसके कुछ धंधे और भी थे जिनके विषय में लोगों को ज्य़ादा जानकारी नहीं थी.
छेनू ने राजू को घूर कर देखा और खुरदुरी आवाज में गुर्राया, "क्यों बे रजुआ, यहाँ क्या कर रहा है?" राजू और विनोद ने एक साथ तपाक से लम्बा सलाम ठोंका. राजू ने हकलाते हुए कहा, "कुछ नहीं गुरू...... बस यूँ ही घूमते हुए आ गए थे." छेनू की घनी मूँछों में एक मुस्कान लहराई. उसने पैनी नज़र से विनोद को तौला और कहा, "ये तेरा दोस्त है?" फिर जवाब का इंतजार किए बगैर ही कहा, "आजकल खेल कूद कैसा चल रहा है? कोई गेम वेम फँसा?" राजू खिसियानी हँसी हँसता हुआ बोला, "हम लोगों को औकात गेम खेलने की कहॉ है, गुरू. बस ऐसे ही तसल्ली कर लेते हैं." ने अपनी मज़बूत हथेली राजू के कंधे पर रखते हुए कहा, "अभी बच्चे हो. बेवकूफ हो. अगर सही माएने में लॉटरी खेलने का शौक है, तो खेल का तरीका बदलो. और वैसे भी अब यह खेल नहीं, बिज़नेस है. और बिज़नेस में अक्ल, मेहनत, पैसा, सभी की ज़रूरत पड़ती है."
राजू ने कई लोगों को कहते हुए सुना कि गेम बनाने में छेनू गुरू का जोड़ नहीं था. सभी प्रमुख लाटरियों के टिकट नंबर, तारीख, पिछले कई दिनों का खुला नम्बर, लकी अंक और टिकटों पर छपी तस्वीरें देखकर छुनू कुछ गणना करता था, जोड़ घटा गुणा भाग करके अंत में एक ऐसा अंक निकाल लेता था, जो अक्सर फॅस जाता था. खास तौर पर तस्वीर को छेनू काफी गौर से, देर तक देखता था. अब यह इत्तफाक था अथवा कुशल गणना, कहना मुश्किल था, पर यह सच था कि इसी हिसाब किताब से छेनू ने न जाने कितने ाख कमाए थे. अभी पिछले हफ्ते ही उसने बीस हजार पैदा किया था.
राजू ने हिम्मत जुटा कर कहा, "गुरू, दो चार गुर हम लोगों को भी सिखा दें. जीवन भर आपका एहसान मानेंगे." छेनू ने जोरदार अट्टहास किया और विल्स जलाते हुए बोला, "पहले तो यह बीस पच्चीस रूपए का घटिया खेल खत्म कर. जब कोई बड़ी पार्टी गेम खेलती है तो एक दिन में कम से कम बीस तीस हज़ार के टिकट पूरे शहर में अपने आदमी दौड़वा कर बटोर लेती है. उसके बाद तो तू जानता ही है कि जितना पैसा लगाया, उसी के हिसाब से उतना फायदा हुआ. दूसरी बात यह है कि एक घर पकड़ा कर तुम लोग आठ दस टिकट एक नम्बर के लेते हों, ओर उसी या दूसरी कंपन के दो चार टिकट दूसरे नम्बर के, साइड में खल लेते हो. मैं यह भी जानता हूँ कि ऐसा इसलिए करते हो कि अगर पहले वाला नम्बर न फॅसा, तो शायद दूसरा खुल जाए, जिससे कम से कम अपना लगाया पैसा तो वापस आ जाए. लेकिन इस तरह का खेल दो कौड़ी का होता है. अगर बिज़नेसमैन बनना है, तो दिलेर भी बनना होगा. ज्य़ादा से ज्य़ादा पैसा एक घर में लगाओं, गेम बनाने के बाद, और भारी मुनाफ़ा कमाओ." **क्रमशः**

पिता तो विवाहित मनुष्य स्वभावतः बन जाते हैं और उनके भरण–पोषण का प्रबंध भी समान्यतया सब पिता कर लेते हैं. उनकी शिक्षा की व्यवस्था भी स्कूलों में हो जाती हैं, लेकिन उन्हें सुशील बनाना और नीतिज्ञ बनाने की व्यावहारिक शिक्षा देना ही पिता का काम हैं. पिता का कर्तव्य है कि वह अपनी संतानों को शीलसम्पन्न और नीतिज्ञ बनाये. समाज में आदर पाने के लिए शीलवान् और नीतिवान् होना अनिवार्य है. आचार्य चाणक्य

द हंगामा इंडिया

हवस की शिकार बनी छः वर्षीया मासूम

आज तो समाज में घटित हो रही घटनाओं को देखकर ऐसा लगता है कि हमारा समाज कितना दूषित हो गया है. प्रत्येक दिन ऐसी कोई न कोई घटना पढ़ने व सुनने को मिल ही जाती है जिससे सुनकर इस समाज में रहने पर अपमान महसूस होता हैं. लगता है वास्तव में कलयुग ने दस्तक दे दी. कहीं न कहीं इसकी जिम्मेवार हमारी संस्कृति व समाज भी हैं शायद.

बरहज थाना क्षेत्र के ग्राम भैदवा के मुनीब राजभर की बेटी झिंगुरी (10वर्ष) और उसके साथ उसकी छः वर्षीया बहन गॉव में ही स्थित प्राथमिक विद्यालय में 1 दिसम्बर को पढ़ने जा रही थी. तभी विकास नामक एक दरिन्दा समाज का कलंकीं युवक ने दोनों बहनो को रोका और बड़ी बहन को झिगुरी को टॉफी देने के बहाने साथ चलने को कहा. लेकिन वह उसके चंगुल में नहीं आयी और वह स्कूल चली गयी. लेकिन उसकी छोटी बहन उसके चंगुल में फस गयी..कुछ देर बाद उसी गॉव के कुछ लोग जो रास्ते से गुजर रहे थे उन्हें किसी बच्ची की चीख सुनाई पड़ी. वे आवाज की तरफ दौड़े. गांव के कुछ लोगों को अपनी ओर आता देख कर विकास भाग गया. गांव के उन लोगों की बच्ची की खून से लथपथ बेहोश शरीर देखकर अपने पैर के नीचे जमीन खिसक गयी. परिजनों के सहयोग से बच्ची को जिला

✍सौरव कुमार तिवारी 'मोनू'

अस्पताल में भरती कराया गया. बच्ची के पिता ने विकास पुत्र राममूरत के खिलाफ धारा 376 के तहत मुकदमा दर्ज कराया. घटना की खबर सुनकर गॉव व क्षेत्र के लोगों में काफी रोश व्याप्त हो गया. सबके मुॅह से बस एक ही आवाज निकल रही थी कि दोषी को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए ताकि ऐसी घटना दूबारा घटित न हो. खैर अब तक अक्सर निष्क्रियता का परिचय देने बरहज थाने की पुलिस ने जनमानस में व्याप्त आक्रोश को देखते हुए दौड़ भाग प्रारम्भ की और एक सप्ताह बाद गिरफ्तार कर अपनी निष्क्रिय छवि के दाग को धोने में कुछ कामयाबी हासिल की.

ब्यूरो बरहज

शब्द रेखा के संपादक विश्व प्रताप भारती ने वापस किया डॉ. अम्बेडकर फैलोशिप अवार्ड

कवि कथाकार लेखक व शब्द रेखा के संपादक विश्वप्रताप भारती ने पिछले वर्ष 6 दिसम्बर 2003 को भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रदत्त डॉ. अम्बेडकर फैलोशिप अवार्ड अपने एक पृष्ठीय पत्र के साथ वापस कर दिया.

भारती ने इस प्रतिष्ठित सम्मान इसलिए लौटाया क्योंकि भारतीय दलित साहित्य अकादमी, अब किसी को भी सदस्य बनाकर यह सम्मान देने लगी हैं. उनका कहना है कि अकादमी ऐसे सैकड़ो लोगों को यह सम्मानजनक अवार्ड दे रही है जिनका डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा एवं सामाजिक सरोकारों से कोई संबंध नहीं हैं. ऐसे में यह सम्मान अपने पास रखना असम्मानजनक हैं.

श्री भारती ने अवार्ड ग्रहण करने के बारे में कहा है कि जिस समय यह अवार्ड मुझे दिया गया तब मुझे मालुम नहीं था कि अकादमी इतना सम्मानजनक अवार्ड रेवड़ियों की तरह किसी को भी बॉटती हैं. अफसोस की बात है कि अकादमी ने अब तो यह नियम बना लिया है कि रुपये दो अवार्ड लों.

ज्ञातव्य है कि भारती की अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और उन्हें देशभर की संस्थाओं द्वारा साहित्य श्री, पत्रकार श्री, कला–गौरव, लघुकथा शिल्पी एवं वरिष्ठ सेवा सम्मान से सम्मानित किया जा चुका हैं.

आदरणी पुरुषों को पिता समान मानकर कुछ नारियों को अपनी माता समान स्वीकार करते हुए जिनके प्रति नतमस्तक रहना चाहिए वे हैं: राजा की पत्नी, गुरु की पत्नी, मित्र की पत्नी, पत्नी की माता. इन पांचों को अपनी माता समान श्रद्धास्पद मानना विवेकशील मनुष्य का धर्म हैं. **आचार्य चाणक्य**

मत ज़ूल्म हज़ार कर

मेरे राहों के जादूगर
लूटे राज का पैगामें स्वीकार कर,
या तो एक बारे में जख़्म हजार कर,
या खूल कर तू सलाम कर
राहों में ना अब यूं परेशान कर
ना छुप–2 कर तू हैरान कर
अब खुलकर तु इजहार कर।
मुझ पर इतन उपकार कर
लूट लिया दिल राहों में
मत रुला अब ईंद का चॉद बन
पहले मेरे गुनाह का अहसास कर
फिर चाहे सितम सौ बार कर
मत तिल–2 तू वार कर
वर्षो से तन्हा गुजरा हुं राह पर
लौटा ना कभी हार कर
एक झलक देखा क्या आपने मुस्कराकर
लूट गया मैं अपना दिल हार कर
मत जख्म, हजार कर,
लूट गया हूँ अब एतबार कर
नववर्ष पर इस राज को तो स्वीकार कर
जो कहना है एक बार कहना
बार–बार यूं जख्म हजार कर।।

रजनीश कुमार तिवारी 'राज'
25बी, महिला ग्राम कॉलोनी, सुबेदारगंज, इलाहाबाद, मो.:9415637530

सभी प्रकार से उल्लेखनीय रहा

१२ वॉ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

गाजियाबद. पिछले 12 वर्षो से दशहरा व दीपावली के मध्य आयोजित होने वाले अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपना एक अलग स्थान बना चुका हैं.

सम्मेलन में स्कूली बच्चों से लेकर वृद्धजन तक के लिए सांस्कारिक आयोजनों की श्रृंखला ने इसे और भी गरिमामय बना दिया. बच्चों की लेखन और चित्रांकन प्रतियोगिता, बच्चों द्वारा भारतीय शैली में प्रस्तुत गीत, संगीत, वादन व सामूहिक नृत्य के कार्यक्रम तथा तीन विचार गोष्ठियों, जिसमें भारतीय भाषा, संस्कृति तथा क्षेत्रिय विकास संबंधी सार्थक चर्चाएं, काव्य निशा के अंतर्गत देशभर से आये कवियों द्वारा श्रेष्ठ काव्य रचनाओं की प्रस्तुति तथा राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मानों का भव्य अलंकरण ने इस समारोह को ऊचाई प्रदान कीं.

समारोह में अतिविशिष्ट जनों में, भारत में मॉरीशस की उच्चायुक्त श्रीमती ऊषा द्वारका कैनावदी, इंडोनेशिया एम्बेसी के मिनिस्टर काउंस्लर श्री सुहादी मुहम्मद सलाम, पदम्श्री डॉ. श्याम सिंह शशि, पूर्व सांसद व हिन्दी सेवी शिक्षाविद् डॉ. रत्माकर पाण्डेय सहित अनेकानेक विद्वानों ने विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय भागादारी से सम्मेलन को नयी गरिमा प्रदान की.

सम्मेलन के दूसरे दिन समापन सत्र में देश के विभिन्न भागों से चुने गए 54 विद्वानों को विभिन्न नामित सम्मानों से अलंकृत किया गया. 12वें सम्मेलन का शीर्ष सम्मान भोपाल के श्री राजेन्द्र जोशी को दिया गया. इनके अतिरिक्त कवीर सम्मान डिबूगढ़ के श्री श्याम विद्यार्थी तथा लखनऊ के डॉ. आशाराम त्रिपाठी को संयुक्त रुप से निराला सम्मान, पटना के श्री विलाश बिहारी को, श्री हनुमानदत्त स्मृति सम्मान, कानपुर के श्री सार्थ को, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल स्मृति सम्मान, भोपाल के श्री प्रमोद प्रकाश सक्सेना को, श्री रामप्रकाश कुन्द्रा स्मृति सम्मान, एटा के श्री सुनहरी लाल शुक्त को, राष्ट्रभाषा संरक्षक सम्मान अहमदनगर के डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख को श्री लाल बहादुर शास्त्री जन्म शताब्दी स्मृति सम्मान, कानपुर के डॉ. बालकृष्ण गुप्ता को, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान जींद के डॉ. केवल कृष्ण पाठक को , वीरांगना दुर्गाभाभी सम्मान, भोपाल की श्रीमती सविता अग्निहोत्री को सुभद्राकुमारी चौहान भोपाल की डॉ. राजश्री रावत को, दुष्यंत कुमार सम्मान, गोधरा के डॉ. दिवाकर दिनेश गौड़ को इस वर्ष से प्रारम्भ किया गया जगदीश कश्यप स्मृति सम्मान गुड़गांव की कनु भारतीय को दिया गया.

मुख्यअतिथि, अपने आमंत्रण के लिए धन्यबाद दिया तथा मॉरीशस को लघु भारत कहा.

अध्यक्ष डॉ. रत्नाकर पाण्डेय ने कहा कि हिंदी हमारे लिए धर्म है, पूजा हैं. उन्होंने उमांशकर मिश्र की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि हिंदी के लिए वे तन–मन धन से समर्पित हैं और अपना सर्वस्व हिंदी भाषा के लिए अर्पित कर रहे हैं. उन्होंने अकेले दम पर कार्य प्रारम्भ किया और आज पूरा देश जोड़ दिया हैं.

मुख्य संयोजक श्री उमांशकर मिश्र ने कहा कि इस सम्मेलन के आयोजन का एक महत्व तो यह है कि इससे संवादहीनता का कोहरा छटता हैं, उपयोगी विषयों पर चर्चाएं होती है, बच्चों की प्रतिभा का विकास होता है पुस्तक संस्कृति का विकास होता है और प्रकाशनों से पाठकों का साक्षात्कार होता हैं.

पत्रिका के प्रधान संपादक हिमालय और हिन्दुस्तान पत्रकारिता सेवा सम्मान के लिए चयनित

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज के प्रधान संपादक श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को उनके पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गए योगदान को देखते हुए हिमालय और हिन्दुस्तान पाठक मंच ने उन्हें हिमालय और हिन्दुस्तान पत्रकारिता सेवा सम्मान से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. यह सम्मान उन्हें राष्ट्रीय हिन्दी पाक्षिक हिमालय और हिन्दुस्तान की 12 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय अधिवेशन में 30 दिसम्बर 2004 को पूर्व आडवाणी धर्मशाला निकट श्यामपुर बाईपास, ऋषिकेश, देहरादुन में प्रदान किये जाएंगें. यह जानकारी हिमालय और हिन्दुस्तान के पत्र से प्राप्त हुई.

✍सौरभ कुमार तिवारी, ब्यूरो बरहज

'साहित्य सागर' के संपादक श्री कमलाकांत सक्सेना व लोकयज्ञ के संपादक श्री सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत' सम्मानित

राजधानी भोपाल से प्रकाशित सत् साहित्य की बहुचर्चित मासिक पत्रिका 'साहित्य सागर' के संपादक श्री कमलाकान्त सक्सेना को उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए, मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री ईश्वरदास रोहाणी ने 'विश्वम्भर दयाल अग्रवाल सम्मान' से, सेठ गोविन्ददास द्वारा निर्मित 'शहीद स्मारक भवन', जबलपुर में 27 नवम्बर 2004 को विभूषित किया. श्री सक्सेना को सम्मान के अन्तर्गत 5000 रुपये की नगद राशि, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, शॉल आदि प्रदान किए गए. इसी समारोह में बीड़, महाराष्ट्र से प्रकाशित होने वाली हिन्दी मासिक पत्रिका 'लोकयज्ञ' के संपादक को प्रथम मायाराम सुरजन ग्रामीण पत्रकारिता पुरस्कार (नगद 2100रु0, स्मृतिचिन्ह, शॉल, पुष्पहार) 2004 प्रदान किया गया. हास्य व्यंग्य लेखन पर इन्दौर के राज केसरवानी को रामानुजलाल श्रीवास्तव 'ऊँट' सम्मान (2100रु0); ग़ज़ल पर मुबई के शायर इब्राहिम 'अश्क' को स्व. पन्नालाल श्रीवास्तव 'नूर' सम्मान (रु0 2100/);गीत संग्रह 'तुम्हारी सौगंध पर ग्वालियर के वयोवृद्ध कवि वचन श्रीवास्तव को पं. भवानी प्रसाद तिवारी सम्मान (रु0 1100 संयुक्त) सहित डॉ. सूर्यदीन यादव नदी आउखेड़ा, डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र सिवनी मालवा; रामेश्वर शर्मा 'रामू भैया' कोटा, राजस्थान एवं डॉ. श्यामसुन्दर दुबे हटा दमोह को विविध सम्मानों से अलंकृत किया गया. संस्था के अध्यक्ष डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल' एवं महामंत्री आचार्य भगवत दुबे ने सम्मानित साहित्यकारों व पत्रकारों के बारे में जानकारी दी तथा आयोजन के महत्व को रेखांकित किया. वरिष्ठ पत्रकार डॉ. राजकुमार 'सुमित्र' ने अतिथियों का पुष्पाहार पहनाकर स्वागत किया. लोकयज्ञ के सम्पादक प्रा. सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत' का इस पुरस्कार हेतु साहित्य के अनेक मान्यवरों ने अभिनन्दन किया हैं. इनमें गुरुवर्य डॉ. हणमंतराव पाटील, डॉ. सतीश सालुंके, डॉ. नारायण राऊत, डॉ. बाबा साहेब कोकाटे, डॉ. ललिता राठोड़, डॉ. रामेश्वर बांगड़, डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. अयुब पठाण आदि ने लोकयज्ञ के संपादक को बधाई दी. राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज परिवार की तरफ से इन सभी को हार्दिक बधाई

'मधुरेश' को ब्रजभाषा–विभूषण एवं राष्ट्र–गौरव' सम्मान

आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' ने खड़ी बोली हिन्दी, अवधी एवं ब्रजभाषा में अभिनन्दनीय सृजन किया हैं. गीत, छन्द, खण्डकाव्य, महाकाव्य, नाटक, निबन्ध, लघुकथा इत्यादि विविध विधाओं में उनकी अब तक 31कृतियॉ प्रकाशित एवं प्रशंसति हो चुकी हैं. छान्दस कविता के क्षेत्र में उनका अवदान विशेष उल्लेखनीय हैं. उनके साहित्य में स्वस्थ सामाजिकता, तेजस्वी राष्ट्रीयता एवं उदात्त मानवता के मान–मूल्यों को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई हैं. आचार्य 'मधुरेश' को ब्रजभाषा साहित्य की विशिष्ट रचनाधर्मिता, अनुशीलन एवं सवंर्धन के लिए साहित्य मण्डल, नाथद्वारा, राजस्थान ने श्रीनाथ जी के पाटोत्सव पर्व के पुनीत अवसर पर आयोजित ब्रजभाषा–समारोह में 'ब्रजभाषा–विभूषण' की सम्मानोपाधि से विभूषित किया. कुछ दिनों पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'सुरभि साहित्य संस्कृति अकादमी,खण्डवा, म.प्र. ने अपने वार्षिक समारोह में मधुरेश को हिन्दी भाषा/साहित्य/ पत्रकारिता एवं सामाजिक कार्यो में महत्वपूर्ण सेवाओं के उपलक्ष्य में 'राष्ट्र–गौरव' अलंकरण से विभूषित कर सम्मानित किया था.

'चिन्तन का चन्दन' अध्यात्म का अमृत–घट है जिसमें सुकवि ऊँ पारदर्शी ने अपने चिन्तन से गागर में सागर और बिन्दु में सिन्धु समाहित कर दिया हैं.

चिन्तन का चन्दन का लोकार्पण

उक्त उद्बोधन महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत ने प्रसिद्ध चिन्तक एवं कवि ऊँ पारदर्शी की कृति 'चिन्तन का चन्दन' का लोकार्पण करते हुए जयपुर में व्यक्त किए. लोकार्पण के अवसर पर श्रीपारदर्शी के स्वस्थ दीघार्यु जीवन की मंगलकामना करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति जी ने कहा कि पारदर्शीजी मेरे चिरपरिचित सृजनधर्मी हैं जिन्होंने राजनैतिक, धार्मिक एवं अध्यात्म के सौपान चढ़ते हुए काव्य–सृजन में कालजयी कीर्तिमान स्थापित किया हैं. लोकार्पण के अवसर पर लघु एवं मध्यम समाचार पत्र संघ के राष्ट्रीय सचिव भॅवरसिंह चौहान, उपराष्ट्रपति के सचिव श्री देवकीनन्दन गुप्ता आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे.

प्राप्ति स्वीकार

रचना और रचनाकार, लेखक–पारस कुंज, अंगदीप प्रकाशन, भगवान महावीर पथ, स्टेशन चौक, भागलपुर मूल्यः15 रुपये

प्राची, कविता संग्रह, रचनकार–श्रीमती शैलजा दुबे, प्रकाशन–आशुतोष प्रकाशन,डी.डी 1/3, जीवन ज्योति एपार्टमेंट पीतमापुर, नई दिल्ली, मूल्यः150.00 रु.

उज्जयिनी का प्राचीन इतिहास एवं सिंहस्थ का महात्म्य, लेखक–श्री अनिल गुप्ता 'अनिल', प्रकाशक–महाकल भ्रमण प्रकाशन, 8 कोतवाली रोड, उज्जैन,मूल्य–30 रु0

हम भारत के वासी

हम भारत के वासी
असंम्भव को-
सम्भव कर दिखाते हैं।।
तोड़ चट्टाने कदम बढ़त हैं.
रोक के वग तीव्र धारा का
हम कदमों के निंशा बनाते हैं।।
भिड़ के ऑधी -तुफाओ से-
हम सच्ची विजय पताका फहराते हैं।।
हमसी हिम्मत वाले
कोन होंगे जग में।
हम पल में
तारे आसंमा के तोड़ लाते हैं।।
धूल भरे सागर से भी
हम अनमोल रतन तलाश लाते हैं.

जयसिंह अलवरी, दिल्ली स्वीट सिरुगुप्पा, जिला–बल्लारी, कनार्टक

हम आए हैं पास तेरे

हम आए हैं पास तेरे
वीणा की झनकार सुन,
प्रीति के कूल पर,
ज्योतिं के दिये लिए,
पास है पड़े हुए
आत्मा की राह में,
शुष्क दिल-पुकारता,
चिर स्थाई दर्द भरे,
मिलने की कामना,
तड़प रहीं कल्पना,
धूल भरे जीवन में,
मधुर राग छेड़ दों,
जो अधर पट मूक हैं,
प्यासों की मार से,
पीयूष धार के लिए,
प्रतीक्षा में हैं खड़े,
विषाद से दवे हुए,
नैनों के नीर से,
हर्ष दो उल्लास दो,
भिक्षा के पात्र में,
दिन है गुजर रहा,
व्योम रंग वदल रहा,
कलियां है झुम रही,
आभा बिखेरती,
ऐसी गो धूली में,
प्यार भरे कराढों से
'एक चार' के लिए
अब तो पुकार लो।

राजेश कुमार सिंह,बायोवेद शोध फार्म प्रभारी, 103/42, मोतीलाल नेहरु रोड, प्रयाग, इलाहाबाद

बसुधैव कुटुम्बकम्

एक दीप रखा दीप के पास तल के मिटे अंधरे
ना ना करते हुए ही तुम आ गये थे पास मेरे।
आयेगा जरुर कोई आज तेरे घर पे मेहमॉ
छत पर तेरी आज फिर बोला कागा बड़े सवेरे।
यहॉ संभाले पेड़ों ने ही आशिको के आशियाने
पेड़ों पर फूल से लटके हैं पंक्षी के नीड़-बसेरे।
आग बरसाने को निकला तपता हुआ सूरज
आ गये उड़ते हुए पीछे से बादल घनेरे।
जल-तरंग संगीत मधुर भर रहे फिजाओं में
पत्थरों के मध्य करते कल-कल निनाद जल धेरे।
तलाक उनके बीच फिर भी क्यों यहॉ होते रहे
कसम खाते वचन भरते वर-वधू लेते हैं फेरे
छोड़ दे अब सब यहॉ अपने सभी छलक रेब
दाना चुगकर उड़े पंछी चतुरता से न फॅसे रें।
संकीर्णताएं त्याग दें खोल कर सब बंधनों को
समाज में क्यों बन रहे जाति और धर्म घेरे।
एक ही कुटुम्ब सा है सारा विश्व ही यहॉ
कौन है जो कर रहा अलगाववाद अपने-तेरे

अन्यमनस्क

परिवेश में कहीं भी आल्हाद नहीं हैं
इरादा किसी सख्श का फौलाद नहीं हैं
आज फिर किसी का मन दुखा है यहॉ
शायद हम आज भी आजाद नहीं हैं।
पेट भर जाये सभी आदमियों का यहॉ
तकनीक वह आज भी ईजाद नहीं हैं
नागफनी उगी हैं सबके ही दिलों में
जो होना था समाज में आदाब नहीं हैं
रास्ता किधर हमारा, जा किधर रहे हैं हम
नई पीढ़ियों को कुछ अंदाज नहीं है।
पद चिन्ह पूर्वजों के धुधलोक मिट गये
पक्का कहीं उनका तनिक इंद्राज नहीं हैं
यह तो एक भड़कन है बुझते दीपक की
यह नई रोशनी का तो आगाज नहीं है
यह वृक्ष लता फूल और पक्षी सभी चहकें
मौसम भी उतना अधिक सुहास नहीं हैं.

डॉ. सुनील कुमार अग्रवाल, स्वप्निल सदन, रानी बाग, सुभाष रोड, चंदौसी, मुरादाबाद, उ.प्र.

लेखनी के दूत

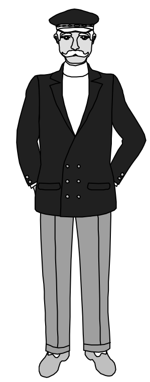

नव प्रगति के द्वार खोलो तुम
जाग्रति के स्वर में बोलो तुम
आदमी इंसानियत को जाान जाऐ
एक दूजे के हमेशा काम आऐं
हर बुराई को ढकेलों तुम
जाग्रति के स्वर में बोलो तुम
एक से बढ़कर अनेकों है समस्या
इनकों सुलझाने की दृढद्य कर लो प्रतिज्ञा
होंसले को दिल में तौलों तुम
जाग्रति के स्वर में बोलो तुम
क्रान्ति हो नूतन नया बदलाव आए
कर्महीं भूखा न बेचारा कहाए
दीन के दुःख दर्द ले लो तुम
जाग्रति के स्वर में बोलो तुम
लेखनी के दूत है मेरी शुभेच्छा
प्राप्त मंजिल हो सफल तेरी परीक्षा
कीर्तिमानों को संजोलों तुम
जाग्रति के स्वर में बोलो तुम

साकेत सुमन चतुर्वेदी,721, चित्रा चौराहाा, ऐबटगंज, झांसी, उ.प्र.

ग़ज़ल

नया–नया इंसान चाहिए
हॅसता हिन्दुस्तान चाहिए
कुर्सी के मोहताज चाहिए
निज गौरव का ज्ञान चाहिए
सर न झुके दुश्मन के आगे
अपनी खुद पहचान चाहिए
देश के लिए सदा समर्पित
देश को नया जवान चाहिए
'इन्दु' राष्ट्र के जो हैं पुजारी
उन्हें राष्ट्र–सम्मान चाहिए

चन्द्रशेखर झा 'इन्दु',संपादक, परिकल्पना, कस्तूरबा गॉधी नगर, नया बाजार, पंजाबी मुहल्ला, लखीसराय, बिहार

जरा हंस दो मेरे भाय

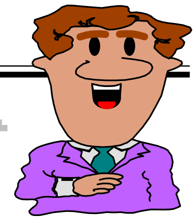

☠डॉक्टर (महिला से) हां बताइए आपको क्या समस्या हैं?
महिला-डॉक्टर साहब, मुझे शक करने की बीमारी हैं. हमेशा यही चिंता सताती है कि मेरे पति मुझे धोखा दे रहे हैं. अब देखिए न, बाहर वे उस नर्स से बात कर रहे हैं और मुझे लग रहा है जैसे उस नर्स से उनका कोई चक्कर हैं.
डॉक्टर-अरे, लगता है तुम्हारा शक सही है क्योंकि तुम्हारा पति जिस नर्स से बात कर रहा है, वह तो मेरी बीबी हैं.

☠ एक बार जॉनी को किसी कारण से पुलिस स्टेशन जाना पड़ा. वहां उसने नोटिस बोर्ड पर एक ईनामी अपराधी का चित्र देखा. थोड़ी देर तक वह उसे गौर से देखता रहा, फिर पास खड़े एक पुलिस वाले से पूछा-'क्या ये सचमुच वही अपराधी है जिसकी पुलिस को तलाश हैं.?'
पुलिस वाला बोला-'हां, इस पर एक लाख का ईनाम भी हैं.'
'लेकिन जब आपने इसका फोटो खींचा था तभी इसे क्यों नहीं पकड़ लिया? सरकार के एक लाख भी बच जातें.
जॉनी से धीरे से कहा.

☠एक जुआरी दूसरे जुआरी से-समझ में नहीं आता, मेरे साथ जुआ खेलने में तुम हमेशा जीत जाते हो, मगर रेस में तुम्हारी हमेशा हार होती हैं.
दूसरा जुआरी-बात यह है कि मैं घोड़ो को बेवकूफ नहीं बना पाता.

☠ एक पागल ने दूसरे पागल से सवाल पूछा-अच्छा बताओं, एक जबरदस्त भीड़ वाली सड़क पर हाथी और चींटी की टक्कर हुई, हाथी की तुरंत उसी स्थान पर मौत हो गई और चींटी बच गई कैसे?
दूसरे पागल ने जबाव दिया-ठीक ही तो हैं, चींटी ने हेलमेट पहना था, इसलिए बच गई. हाथी ने हेलमेट नहीं पहना था, इसलिए मर गया.

☠ राजेश को दुखी देखकर उसके दोस्त रमेश ने पूछा-आज तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है. आखिर क्या बात हैं?
राजेश-कुछ नहीं यार आज मैंने कपिल से भारत इंग्लैड वाले मैं चर पर सट्टा लगाया था और एक हजार रुपये हार गया.

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम

स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट

THE REVISIT SHOP

Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद
फोन : 2608082

रमेश-अरे ये कैसे हो गया? तुमने तो सट्टा पांच सौ रुपये का लगाया था.
राजेश- वो तो ठीक है, लेकिन मैनें जोश में आकर पांच सौ रुपये का सट्टा गलती से शाम आने वाली हाइलाइट्स पर भी लगा दिया.

☠झगड़ा हो जाने पर एक छात्र ने दूसरे छात्र को धमकी दी- मैं अभी भी कहता हूं मुझसे मांफी माग ले. वरना तेरे तीस दांत तोड़ दूंगा.
पहला छात्र-आजकल छूट का जमाना है, इसलिए दो दांतो का डिस्काउंट दे रहा हूं.

☠एक बार होटल में एक व्यक्ति कभी समोस तो कभी ब्रेड पकौड़ा मंगाता, लेकिन उसके भीतर के आलू खाता और बाकी छोड़ देता. यह देखकर बैरे को काफी गुस्सा आया. वह उस व्यक्ति के पास जाकर बोला-क्या बात है साहब आप आलू तो खा लेते हैं बाकी छोड़ देते हैं, क्या ये सब खाना अच्छा नही हैं.
आदमी-नहीं ऐसी बात नहीं है, दरअसल मेरे डॉक्टर ने मुझसे कहा था कि कभी भी बाहर की चीज मत खाना इसलिए मैं इसके अंदर के आलू खा रहा हूं बाहर की ब्रेड नहीं.

☠प्रेमिका -प्रेमी से- अगर मैं मर गई, तो तुम बहुत रोओगें?
प्रेमी-हां, बहुत जोर-जोर से.
प्रेमिका-अच्छा, तो जरा दिखाओं.
प्रेमी-नहीं, पहले तुम मर कर दिखाओं

इस स्तम्भ में आप भी अपने पंसद के चुटकुलें भेज सकते हैं। हम अगले अंक से एक ईनामी चुटकुला प्रतियोगिता राजरानी चाय की तरफ से प्रारम्भ कर रहे हैं. इसमें अच्छे चुटकुलों को पुरस्कृत किया जाएगा।

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस पर सभी क्षेत्र वासियों व विश्व स्नेह समाज के पाठकों को हार्दिक बधाई

रामअशीष पाण्डेय

(वरिष्ठ अध्यापक)
ग्राम प्रधान,
ग्राम पंचायत–धौला, जिला–देवरिया

स्वास्थ्य

गर्भनिरोध के कुछ उपाय

श्रीमती मोना द्विवेदी, सेक्स स्पेस्लिस्ट

गतांक से आगे......

☞स्पर्मिसाइड टेबलेट गर्भ नियंत्रण का एक नया तरीका है. इसके इस्तेमाल से पहले पैकेट पर लिखें निर्देश पढ़ें.

☞संभोग से दस मिनट पहले टेबलेट योनि के अंदर रखें. इससे पुरुष वीर्य में स्थिति शुक्राणु डिंब तक नहीं पहुंच पातें.

☞यह तरीका बहत्तर से चौरानवे प्रतिशत सफल हैं.

☞स्पर्मिसाइड केमिस्ट की दुकान पर आसानी से मिलते है और ज्यादा महंगे भी नहीं हैं. दस गोलियों के एक पैकेट की कीमत मात्र पैंतीस रुपए हैं.

☞कभी–कभी कुछ महिलाओं को इसके इस्तेमाल से एलर्जी भी हो सकती हैं. ऐसा होने पर तुरंत इसका प्रयोग रोक दें.

☞गर्भनिरोध का एक और नया तरीका डीएन ए इजेंक्शन का हैं. यह इजेंक्शन बारह हफ्ते में एक बार लिया जाता है

☞इससे ऑव्यूलेशन रुक जाता हैं. यह गर्भनिरोध का अच्छा साधन हैं.

☞**डिलीवरी के छह हफ्ते बाद ही इसका प्रयोग प्रारंभ किया जा सकता है.**

☞**इसके साइड इफेक्ट में मासिक अनियमित हो सकता हैं. सिरदर्द, मानसिक तनाव, पेटदर्द, यौनेच्छा में कमी या वृद्धि तथा वजन बढ़ने की शिकायत भी हो सकती हैं.**

☞**गर्भनिरोधक गोलियों का इस्तेमाल करने से पहले किसी स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलें. वह आपके लिए उपयुक्त गोली का चुनाव करेंगी.**

☞**गर्भनिरोधक गोलियों का निर्देशानुसार सही और नियमित इस्तेमाल करें.**

☞**इन गोलियों में स्त्री हारमोन एस्ट्रोजन तथा प्रोजेस्टोन का मिश्रण होता हैं.**

☞**गर्भनिरोधक गोलियां पिचानवे से निन्यानवे दशमलव नौ प्रतिशत तक कारगर होती हैं**

☞**गर्भनिरोधक गोलिया आसानी से केमिस्ट की दुकान पर उपलब्ध हैं.**

☞हालांकि इनके दुष्प्रभाव कम होते हैं, लेकिन वजन बढ़ने, माहवारी ज्यादा होने जैसी कुछ शिकायते हो सकती हैं.

☞गर्भनिरोध का एक और तरीका आई यू डी (इंट्रा यूटरिन डिवाइस) या कॉपर टी भी हैं.

☞यह प्लास्टिक का होता है, जिसमें कॉपर या हारमोन्स होते हैं, जो ऑव्यूलेशन को रोकते हैं.

☞इसकी सफलता की दर सतानवे दशमलव सात से निन्यानवे दशमलव दो प्रतिशत हैं.

☞कॉपर टी को स्त्री रोग विशेषज्ञ ही लगाते हैं. यह बहुत आसान तरीका हैं, लेकिन ध्यान रखें कि इसकी प्रत्येक स्ट्रिंग दिखायी देती हैं.

☞इसे हर तीन वर्ष के अंतराल पर बदलवा लेना चाहिए, अन्यथा इन्फेक्शन की संभावना रहती हैं.

☞आई यू डी के प्रयोग से मासिक धर्म अधिक हो सकता है तथा टयूब में संक्रमण भी हो सकता है. अगर अभी तक गर्भधारण नहीं किया है, तो यह उपाय नहीं अपनाना चाहिए.

☞कॉपर टी सरकारी अस्पतालो में मुफ्त लगायी जाती हैं.

☞इसे मासिक धर्म के दौरान या इसके सात दिनो के भीतर लगाया जाता हैं.

☞एक दो बच्चों के जन्म के बाद स्थायी उपाय के रुप में स्त्री या पुरुष नसबंदी करवा सकते हैं. इसकी सफलता दर निन्यानवे दशमलव पांच से निन्यानवे दशमलव नौ प्रतिशत हैं.

☞कभी–कभी सहवास के पश्चात आपातकालीन गर्भनिरोधक की आवश्यकता पड़ती हैं, जैसे कंडोम के लीक हो जाने पर, डायफ्राम या सर्वाइकल कैंप के खिसक जाने पर, सुरक्षित दिनों का हिसाब गड़बड़ा जाने पर, असुरक्षित संबंध बनाने पर.

☞ऐसी स्थिति में पांच दिन के अंदर आई यू डी लगावाएं. यह तरीका निन्यानवे दशमलव नौ प्रतिशत तक कारगर होता हैं.

☞आपातकालीन गभनिरोधक का इस्तेमाल ना करें

स्वास्थ्य समस्याएं

डॉ. श्रीमती पी. दूबे

प्रश्नः मैं 18 वर्षीय छात्रा हूं. मेरी टांगों में हमेशा दर्द रहता है, इससे मैं ज्यादा देर तक पैदल नहीं चल पाती हूं. वैसे शारीरिक रुप से मैं स्वस्थ हूं. दर्द से राहत पाने के लिए मुझे कौन सी दवा लेनी चाहिए.

अनिता गिरी, दिल्ली

उत्तरः टांगों में दर्द अकसर शाम को होता हैं. दिन भर चलने–फिरने से शरीर में पानी और नमक की कमी हो जाती हैं. समय पर न खाने से शरीर में शुगर की कमी हो जाती हैं. विटामिन बी–12, कैल्शियम और प्रोटीन की कमी भी दर्दका कारणा हो सकती हैं. समयपर संतुलित भोजन, फल, दूध के सेवन से लाभ होगा.

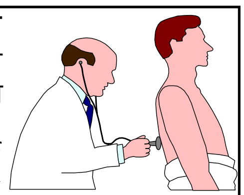

प्रश्नः मैं 25 वर्षीया विवाहिता हूं. पिछले कई वर्षो से मुझे ल्यूकोरिया की शिकायत हैं. इससे मुझे पेट के निचले हिस्से में दर्द भी रहता हैं. कोई इलाज बताएं? सुनिधि चौहान, अजनाला

उत्तरः ल्यूकोरिया इंफेक्शन की वजह से होता हैं. यह इंफेक्शन बैक्टीरियल भी हो सकता हैं अथवा फंगल भी. इसमें पेट के निचले हिस्से में दर्द, कभी–कभी बुखार, अनियमित माहवारी एवं सफेद पानी का रिसाव होता है. इसके लिए आप किसी महिला रोग विशेषज्ञ से मिलें.

स्नेह कहॉनी

सच्चा प्यार

सौरभ कुमार तिवारी

ग्रीष्म कॉलीन छुट्टी बिताने के बाद जब प्रभात अपने घर वापस आया तो शाम का वक्त था. अपने सामने से आती हुई रोशनी को आगाज किए लड़की को देखकर चौक गया. वह उस लड़की की सुन्दरता को देखकर सपनों में खोया हुआ घर पहुॅच गया. उस लड़की की तस्वीर प्रभात की ऑखों के सामने से हटने का नाम ही नहीं ले रही थी. वह रात भर उस लड़की के बारे में ही सोचता रहा. सुबह वह तैयार होकर कॉलेज गया वहॉ वहीं चेहरा पुनः देखा. उसके बाद उसने उस लड़की को खोजने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नहीं मिली. शाम को छुट्टी के वक्त घर आने को निकला तो किसी लड़की ने आवाज दी चॉद-चॉद तब प्रभात ने देखा वह लड़की रुकी. वह समझ गया कि उसके खोज का नाम चॉद है. वह उसका पीछा किया. चॉद उसके घर के सामने से ही गुजरी और अपने घर चली गयी. प्रभात ने अपने दोस्तों से पूछा तो पता चला कि उसके पापा बैंक में मैनेजर है और वह इस शहर में नये आये हैं.

धीरे-२ समय गुजरता गया. आगे मालुम चला की प्रभात के पापा चॉद के फेमिली डॉक्टर हैं. प्रभात और चॉद का एक दूसरे के घर आना जाना शुरु हो गया और दोनों दोस्त बन गए और यह दोस्ती प्रेम में बदल गयी. लेकिन दोंनों में प्यार का ईजहार करने की हिम्मत नही हो रही थी. इसी बीच चॉद का बचपन का दोस्त विवेक आ गया. विवेक को देखकर चॉद बोली, अरे विवेक तुम यहॉ कैसे? विवेक-'मेरे पापा का इसी शहर में तबादला हो गया हैं. वे पोस्टमास्टर हैं.' अब चॉद के दिल में विवेक और प्रभात दोनों ने जगह बना ली. एक दिन विवेक और प्रभात में चॉद को लेकर झगड़ा हो गया. विवेक ने कहा प्रभात तुम चॉद को भूल जाओं वरना बहुत बुरा होगा. चॉद के मन में भी अब विवके के प्रति ज्यादा प्यार हो गया था. चॉद के प्यार में डूबे प्रभात के नम्बर परीक्षा में कम आए. एक बार उसने चॉद से प्यार का इजहार किया. चॉद ने उसे बहुत भला बुरा कहा और दोस्ती तोड़ ली. चॉद विवेक के प्यार में ऐसे पागल हो गई थी जैसे नागिन बीन के आवाज सुनकर नाचने लगती हैं. वह मेधावी छात्र था.चॉद की बड़ी बहन नेहा ने भी चॉद को समझाया कि प्रभात बहुत अच्छा लड़का हैं, तुम्हें सच्चे दिल से प्यार

करता हैं. वह गर्मी, जाड़ा, बरसात दिन रात सुबह-शाम तुम्हारी एक झलक पाने के लिए अपने घर कोई न कोई बहाना बनाकर आता रहता है.

चॉद ने कहा-'दीदी, मैं विवेक को बचपन से जानती हुं. विवेक अब बदल गया हैं. आपका प्यार आपको नहीं मिला इसलिए मेरे प्यार को देखकर आपको जलन हो रही हैं. मैं शादी करुंगी तो सिर्फ विवेक से.'

विवेक ने चॉद को बहुत सपने दिखाये थे. पढ़ाई खत्म होते ही विवेक और प्रभात की नौकरी लग गयी. दोनों को दूसरे शहर में नौकरी मिली थी. विवेक बाहर जाते हीं चॉद को भूल गया लेकिन प्रभात के दिल में चॉद के लिए वहीं प्यार था जो वर्षो पहले. चॉद की शादी अजय नामके एक लड़के से तय हो गई. इसकी सूचना जब प्रभात को मिली तो मानो उसके पैर के नीचे से जमीन खिसक गई हों. वह ग़म में डूब गया और शराब पीना प्रारम्भ कर दिया. वह एक दिन मंदिर गया और कहा-भगवान मुझे किस पाप की सजा दे रहे हों. अगर तुम मुझे चॉद को नहीं दे सकते तो मेरी जॉन ही ले लो. मैं जीकर क्या करुंगा. वह अपना सीर पटकने लगा. तभी मंदिर के पुजारी ने उसे समझाया बेटा अगर तुमने सच्चा प्यार किया है तो चॉद तुम्हें जरुर मिलेगी. भगवाना पर भरोसा रक्खों. भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं.

उधर चॉद की शादी अजय के साथ बहुत धुम धाम से हो गई. उसे ख़ुशियॉ ही ख़ुशियॉ मिल रही थी. इधर प्रभात ने शादी न करने का फैसला किया. चॉद मां बनने वाली थी. उन्हीं दिनों उसका परिवार बाहर कहीं घूमने गया रास्तें में गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया. सारे लोगों को अस्पताल पहुंचा गया उसके परिवार के सभी लोग मौत के मुंह में समा गये. केवल चांद व उसका पेट का बच्चा बच गए. चॉद के ऊपर मानों मुसीबत का पहाड़ टुट पड़ा हो. वह वापस अपने मायके चली आई. उसके परिवार वालों ने कहा-बेटी तुम दूसरी शादी कर लो. अकेले इस समाज में नहीं रह पाओंगी. उसने विवेक से कहा 'मैं तुमसे शादी करना चाहता हूॅ.' पर विवेक ने कहा-'तुम पागल हो गई हो. क्या चॉद मैं शादी वह भी विधवा व एक बच्चे की मां से. दो दिन तुमसे बात क्या कर ली, तुम्हारे साथ घूम क्या लिया तुम इसे प्यार समझ बैठी. चॉद यह बात अपने परिवार वालों को बताई. उसने कहा आखिर विधवा से कौन शादी करेगा. नेहा ने कहा-'प्रभात अब भी तुमसे प्यार करता है. मैंने उसकी ऑखों में अब भी तुम्हारे लिए प्यार देखा हैं.

चॉद-नहीं दीदी. मैंने उसे बहुत बुरा भला कहा था. वह मुझसे नफरत करता होगा.

नेहा-'अरे पगली! प्यार तो प्यार एक बार प्रभात से बात करके तो देखं.

चॉद ने सारी बात प्रभात को बताई. प्रभात ने कहा-'मैं कब से तुम्हारें इन्तजार में तड़प रहा हुं.'

चॉद-प्रभात मुझे माफ कर दो मैंने तुम्हारा बहुत दिल दुखाया हैं.

प्रभात-'तुम मुझे मिल गई और मुझे कुछ नहीं चाहिए.

चॉद और प्रभात की शादी हो गई.

इस उम्र में अजब ही अब मंजर दिखाई दे
जो कोई दिलनशी मिले दिलबर दिखाई दें
गर आदमी में हो जो निगाहें खुलूस की
हो बूंद प्यार की तो समुन्दर दिखाई दें

जियाउर रहमान जा़फरी,
साहित्य सदन, मुजफरा बाजार, बेगूसराय, बिहार

रोहिणी नक्षत्र में जन्मी महिलाएं सर्वगुण संपन्न और सौभाग्यशाली होती हैं.

अपने नाम से ही रोहिणी, स्त्री जाति का नक्षत्र होने का आभास दिलाता हैं. त्रिदेवों को संचालित करने वाली महालक्ष्मी भी स्त्री हैं. स्त्री रुपा देवी ने लक्ष्मी या सरस्वती या फिर दुर्गा के रुप में सदा ही मानव का कल्याण किया हैं. चद्रंमा को अपने पहले नक्षत्र का स्थान वृषभ राशि में प्राप्त हुआ हैं. रोहिणी नक्षत्र का स्वामी तो मन का कारक चंद्र हैं. किंतु इसके अधिदेव सृष्टि रचयिता ब्रहमा जी स्वयं हैं. वेदों से लेकर सामान्य ज्ञान का बोध और विस्तार इन्हीं के कारण होने से मानव के मन में ज्ञान के बीज अंकुरित होते हैं. शास्त्रो के अनुसार रोहिणी चंद्र की प्रिय पत्नी का नाम है और चंद्र इस नक्षत्र में बलशाली माना जाता हैं. यदि आप इस नक्षत्र की छत्रछाया में पैदा हुए हैं, तो आप अपने व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में जान सकते हैं.

यदि आप रोहिणी नक्षत्र में पैदा हुए पुरुष हैं तो आमतौर पर आप पतले-दुबले, आकर्षक व्यक्तित्व और मोहक चेहरे के स्वामी होंगे. कद और शरीर का फैलाव बाकी ग्रहों पर निर्भर करता हैं. आपकी आंखों में आकर्षण व सम्मोहन के गुण होते हैं. शारीरिक भव्यता प्रभावित करती हैं. स्वभाव से शांतिप्रिय होते हुए भी कभी-कभी आपका गुस्सा ज्वार-भाटें की तरह उफान पर रहता हैं जिसे शांत करना आसान कार्य नहीं होता हैं. आपके निर्णय भी अटूट होते हैं. किसी की बात मानना या अपने इरादे को बदलना आपके वश से बाहर होता है. आप भावुक होने के कारण दिमाग से काम लेते हैं. सही गलत का ध्यान आपको बहुत देर से आता हैं. दूसरो के अवगुणों का बखान करना आपकी बातचीत का मुख्य मुद्दा होता हैं. ईर्ष्या या बदले की भावना से जाग्रत होने पर आप अहित भी कर सकते है, लेकिन प्यार में त्याग करने से भी नहीं चूकते. हां, अपने मियां मिट्ठू बनना आपकी आदत हैं. सत्य व असत्य को समझना व बोलना आपको अच्छी तरह आता हैं. चंद्रमा की तरह हर दिन एक नई विचारधारा आपके जीवन व कार्यशैली को प्रभावित करती रहती हैं. इसी कारण जीवन में आपको उतार-चढ़ाव का सामना अकसर करना पड़ता हैं. परिस्थितियों के अनुसार, अपने को ढालने में आप माहिर होते हैं. मन पर नियंत्रण पा लेने पर आप किसी भी क्षेत्र में बुलंदियों तक पहुंच सकते हैं, आसानी लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं. स्वभाव वश आप सभी कुछ सीखने को लालायित रहते हैं, लेकिन इस चक्कर में आधो-अधूरे कार्य ही कर पाते हैं. पढ़ाई लिखाई के क्षेत्र में अकसर बदलाव चाहते हैं. स्थिर चित होने पर किसी भी विषय में महारत हासिल करने में पूरी ताकत लगा देते हैं. जीवन में सफलता पाने के लिए आपको लगातार प्रयासरत रहना आवश्यक हैं, नहीं तो आप एक कुशल सहायक तो हो जाएंगे, लेकिन उच्च पद या किसी क्षेत्र में विशेषज्ञ नहीं बन सकते. आपकी स्वतंत्र भावनात्मक कार्यशैली और विचार प्रवाह आपको शिखर से जमीन पर कब ला पटक दें, आप इसका अनुमान नहीं लगा पाएंगें. यह देखा गया है कि अनवरत प्रयास करने पर रोहिणी नक्षत्र में जन्में व्यक्ति सफलता की बुलंदियां छू जाते हैं. अकसर १८ से ३६ तक की उम्र तक सघर्ष का दौर चलता है. लेकिन इसके बाद ५० की आयु तक व फिर ६५से ७५ साल तक का समय आपके जीवन का स्वर्णकाल सिद्ध होता हैं. दूसरों पर सहज ही विश्वास कर लेना आपकी कमजोरी हैं और इसी कारण आप अकसर धोखा खाते हैं. मां-बाप व नाना-नानी के चहेते होते हैं. मन में बिखराव आने पर रिश्तेदार हीं नहीं, बल्कि जीवन साथी से भी संबंध विच्छेद करने में देर नहीं करते और तिरस्कार कर हीं दम लेते हैं. शारीरिक तौर पर आपको सभी घातक बिमारिंया लग सकती हैं और रक्त संबंधी विकार, मूत्र विकार, पीलिया, दमा, पक्षाघात आदि बीमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं. आपकी आत्मा का कारक सूर्य यदि इस नक्षत्र के प्रथम पाद में हो, तोआप बुद्धिमान व चालाक होंगें, समाज में मान होगा और वाहन आदि के व्यापार में चमक सकते हैं. दूसरे पाद में पेट्रोल, तेल आदि के कार्य व तीसरे पाद में सार्वजनिक क्षेत्र में उच्च पद पर आसीन होते हैं. चौथे पाद में आप उच्च सरकारी पद पर विराजमान होते हैं, लेकिन घरमें पत्नी की आज्ञा का पालन करेंगें.

यदि आप रोहिणी नक्षत्र में जन्मी स्त्री हैं, तो आप श्रेष्ठ गुणों से संपन्न होगीं. अत्यधिक सुंदर, चंचल आंखें, गोरा रंग, मध्यम कद, लेकिन सुंदर व आकर्षक देह वाली होगीं. अच्छी पोशाक पहनने का शौक रखती हैं आप. मधुर स्वभाव व राजसी ठाट-बाट के साथ रहना पंसद करती हैं. जीवन में व्यावहारिक होती हैं, लेकिन उकसाएं जाने पर बदला लेकर हीं छोड़ती हैं. अपने कार्य स्वयं करने और सौंपी गई जिम्मेदारी को बखूबी निभाने का गुण होता हैं. भले ही शिक्षा का स्तर कम हों, लेकिन होशियार होती हैं. पति की प्रिय होती हैं. शादी के मामले में हठी भी हो सकती हैं और एक आदर्श मां की भूमिका भी निभाती हैं. आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान जवानी से हीं देना चाहिए नहीं तो लापरवाही करने पर दाग और पैंरो में दर्द व किसी को स्तन कैंसर जैसी बिमारियां घेर लेती हैं. आपके मन का कारक चंद्र भी रोहिणी नक्षत्र में आ जाए तो सौभाग्यवती होंगी, धन दौलत भी प्रचुर मात्रा में होगी. रोहिणी के दूसरे चरण में आपको कुछ कष्ट भी प्राप्त हो सकते हैं. तीसरे पाद में अक्लमंद होते हुए भी आप डरपोक रहती हैं. चौथे पाद में आप निडर और सत्यवादी होती हैं. चंद्र राशि से बृहस्पति कहीं सप्तम भाव में बैठा हो, तो आपको अपने जीवन साथी का प्यार और दांपत्य जीवन में सुख प्राप्त होता हैं.

जबान से सुनना

आप जबान पर एक इलेक्ट्रोड रखिये और यह वस्तुओं की तश्वीर दिमाग तक पहुँचायेगा. मेडिसिन के विसकांसिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पाल बाकरिटा और कुर्टकोक्जामारेक ने एक एसे यंत्र का विकास किया है जो कि डाक टिकट से भी छोटे आकार है और १.४४ ग्रिड सोने की प्लेट का इलेक्ट्रोड हैं यह प्रणाली भविष्य में अंधे लोगों के रचनात्मक विचारों को साफ्टवेयर उत्पाद जैसे कि कम्प्यूटर ग्राफिक, परीक्षण, डिजाइन आदि में खरी उतरेगी. इसका परीक्षण किया गया तो कम्प्यूटर पर ख्रा है. इकाई से परिचित होने मेंभेंली भाति ५० घंटे का समय लगता है. शोधकर्ताओं को आशा है कि वे एक छोटी सी प्रणाली को विकसित कर लेंगे.

८९ साल की उम्र में किया प्राइमरी पास

रोम. कहते है कि पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती हे. इसे इटली के एक किसान ने सच कर दिखाया. सिसली के रहने वाले एंटोनियों सोला ने ८९ वर्ष की उम्र में प्राइमरी स्कूल की परीक्षा पास की हें. एटोनियों ने बचपन में चार साल तक पढ़ाई की थी. लेकिन एक ही क्लास में तीन साल तक अटके रहने की वजह से उनके पिता ने उसे काम पर लगा दिया. लेकिन सोला पढ़ना चाहते थे. अंततः उन्हें उनके शहर मुसोमेली में वयस्कों की एक संस्था ने मदद की और ८९ साल की उम्र में उन्होंने प्राइमरी स्कूल की परीक्षा पास कर ली. इस उपलब्धि के बाद सोला ने बताया कि उन्होंने खुद को चुनौती दी थी और उन्हें खुशी है कि वे जीत गए. सोला को स्कूल के एक कार्यक्रम के दोरान प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा.

संबसे लंबी साड़ी

चेन्नई गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस में नाम दर्ज कराने के लिए चेन्नई की एक कंपनी ने दुनिया की संबसे लंबी साड़ी तैयार करवाई हैं. सिल्क की इस साड़ी की लंबाई ७०० फीट हैं. इस पर पल्लव आर्किटेक्ट के बेहतरीन नमूने महाबलिपुरम का चत्रि उकेरा गया है. इसके चारों ओर सागर की लहरों जैसी पट्टी बनाई गई हैं. छह कारीगरों ने १६ बुनकरों की मदद से रात-दिन काम करके इसे सुंदर स्वरुप प्रदान किया हैं. इससे पहले गिनिज बुक रिकार्ड में ३६६ फीट लंबी साड़ी दर्ज हैं.

चीन में बेटियां पैदा करने वालों दंम्पति पुरस्कृत होंगें

चीन में जनसंख्या नियंत्रण के लिए चलाई जा रही -एक संतान नीति के कारण स्त्री-पुरुष अनुपात के बिगड़ने से सरकार बेहद चितित हैं. इस नीति का नतीजा है कि वहां लड़कियों की तादाद में भरी कमी आ गई हैं. इस समस्या के निराकरण के लिए अब सरकार ने बेटी पैदा करने दंपतियों को पुरस्कृत करने की योजना बनाई हैं.

पिछले साल चीन में जन्में ११७ लड़कों पर लड़कियों की संख्या केवल १०० रह गई है. जबकि दुनिया में लड़के व लड़कियों का अनुपत १००:१०५ हैं. परिवार नियोजन के शीर्ष अधिकारियों का कहना है कि २०२० तक चीन में ३ करोड़ से ज्यादा महिलाओं की कमी को देखते हुए दो बेटियों वाले दंपतियों को प्रोत्साहन राशि देने की पेशकश की गई हैं. साथ ही लिंग निध ारिण कर गर्भपात कराने पर भी रोक लगाई जाएगी. राष्ट्रीय जनसंख्या और परिवार नियोजन आयोग के उप मंत्री झाओं बेगी के मुताबिक चीन ने लिंग अनुपात के सामान्य स्तर को २०१० तक कम करने का लक्ष्य रखा हैं.

ड्रग्स खिलाकर लूटती थीं दादी मां

रोम. लोगों को नशीली दवाएं खिलाकर लूटने वाली ८० वर्षीय एक महिला को इटली की पुलिस ने गिरफ्तार किया हैं. विटोरिया बेनेट्टी नामक महिला ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों को अपनी चिकनी चुपड़ी बातों में उलझाकर नशीले पदार्थ खिलाकर लूट लिया करती थी. फिर उस रकम से जुआ खेलने कैसिनों पहुंच जाती थी. हाल ही में ट्रेन से सफर के दौरान ७० वर्षीय महिला यात्री का सामान लेकर वह फरार हो गई. बेनेट्टी ने उक्त महिला की कॉफी में नशीली दवा मिला दी थी. जब वह महिला बेहोश हो गई तब वह १२२६ डॉलर लूट कर चंपत हो गई. वहां से वह सीधे कैसिनों पहुंची और जुए में सारी रकम हार गई. बेनेट्टी के आपराधिक रिकार्ड में इस

तरह के कई मामले पहले भी दर्ज थे इसलिए उसे स्लोवेनिया के एक जुआघर से आसानी से गिरफ्तार कर लिया गया.

पत्नी को बंदर समझ गोली से उड़ाया

कुआलालंपुर. एक दूसरे को बेहद प्यार करने वाले पति–पत्नी की इस जोड़ी ने करीब चार दशक साथ–साथ रहकर जिंदगी के कई उतार–चढ़ाव देखें. अपनी नजरों के सामने सौ से भी ज्यादा सदस्यों वाले परिवार को पलते–बढते देखा, लेकिन जरा सी गलतफहमी ने दोनों को हमेशा के लिए जुदा कर दिया. अपने बगीचे के पेड़ से फल तोड़ती पत्नी को पति ने बंदर समझ लिया और गुस्से में आकर गोली चला दी. गोली सीधे उसकी पत्नी को लगी और उसकी मौत हो गई. घटना के बाद पुलिस ने लापरवाही से गोली चलाकर हत्या करने के जुर्म में पति को गिरफ्तार कर लिया. मध्य मलयेशिया के पहांग प्रांत में रहने वाली 68वर्षीय मीयाह हमीद अपने घर के पीछे बगीचे में पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ रही थी. तभी उसका पति वहॉ पहुँचा और पेड़ के पत्तों को हिलते देखा. उसे लगा जैस बंदरों ने बगीचे पर हमला बोल दिया है और वे सारे फल नष्ट कर देंगें. मीयाह पत्तों के पीछे छिपी हुई थी.

मास्टर ब्लास्टर सचिन ने गावस्कर के रिकार्ड की बराबरी की

34 टेस्ट शतकों के सुनील गावस्कर के विश्व रिकार्ड की 11 दिसम्बर को बराबरी करने वाले मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर का कीर्तिमान बनाने का सिलसिला अगले दिन भी नहीं थमां. सचिन ने नाबाद 248 रन बनाकर न सिर्फ अपने कैरियर की सर्वश्रेष्ठ पारी खेली बल्कि जहीर खान के साथ आखिरी विकेट के लिए 133 रन जोड़कर नया भारतीय रिकार्ड बनाया. चौथा दोहरा शतक लगाकर तेंदुलकर भारत की ओर से सर्वाधिक दोहरे शतक बनाने वाले खिलाड़ियों की सूची में सुनील गावस्कर के साथ दूसरे नंबर पर आ गये हैं. वह भारत की ओर से सर्वाधिक निजी स्कोर बनाने वाले खिलाड़ियों की सूची मे चौथे नंबर पर आ गये हैं. इसके साथ ही उन्होंने टेस्ट खेलने वाले सभी देशों के खिलाफ शतक ठोंकने के पूर्व आस्ट्रेलियाई कप्तान स्टीव वॉ तथा दक्षिण अफ्रिका के गैरी क्रिस्टेन के रिकार्ड को भी छू लिया. दिलीप सरदेसाई तथा वीनू मांकड ने दो बार यह कारनामा किया हैं. भारत की ओर से पहला दोहरा शतक लगाने का कीर्तिमान पाली उमरीगर के नाम हैं. उन्होंने 1955–56 में न्यूजीलैंड के खिलाफ हैदराबाद में 223 रन बनाये थें.

यदि वह टेस्ट मैंच के बाद 121 रन और बना लेते हैं तो एक कैलेंडर वर्ष में एक हजार रन से अधिक रन बनाने के गावस्कर को पछाड़ देगें. अब तक टेस्ट मैंच में 9843 रन बनाकर सचिन टेस्ट मैंच के दस हजार रन के जादुई आकड़े से मात्र 157 रन दूर हैं.

गावस्कर व सचिन आमने–सामने

	मैंच	पारी	रन	उच्च	औसत	100	50	कैंच
सुनील	125	214	10122	236	51.12	34	45	108
सचिन	119	192	9754	241	57.04	34	38	74
			घरेलू मैंदान पर					
सुनील	65	108	5067	236	50.17	16	23	51
सचिन	51	84	4390	217	58.53	15	16	38
			विदेशी धरती पर					
सुनील	60	106	5055	221	52.11	18	22	57
सचिन	68	108	5364	241	63.52	25	26	44
			पहली पारी में					
सुनील		124	6159	236	50.90	23	23	82
सचिन		117	6840	241	63.52	25	26	44
			दूसरी पारी में					
सुनील		90	3963	221	51.57	11	22	26
सचिन		75	2814	176	46.90	9	12	30
			बतौर कप्तान					
सुनील	47	74	3449	205	50.72	11	14	45
सचिन	25	63	2054	217	51.35	7	7	16
			जीत में प्रदर्शन					
सुनील	23	42	1671	166	43.97	6	7	25
सचिन	35	55	2905	194	63.15	10	10	24

भारतीय जीत में सुनील की श्रेष्ठ पांच पारियां

रन	बनाम	स्थान	सत्र
166	पाक	चेन्नई	1979.80
123	आस्ट्रेलिया	मुंबई	1979.80
119	न्यूजीलैण्ड	मुंबई	1976.77
118	आस्ट्रेलिया	मेलबर्न	1977.78
116	न्यूजीलैंड	ऑकलैंड	1975.76

भारतीय जीत में सचिन की श्रेष्ठ पांच पारियां

रन	बनाम	स्थान	सत्र
194	पाक	मुल्तान	2003.04
193	इंग्लैंड	लीड्स	2002
176	जिंबाबे	नागपुर	2001.02
165	इंग्लैंड	चेन्नई	1992.93
155	आस्ट्रेलिया	चेन्नई	1997.98

एक कैलेंडर वर्ष में सुनील के हजार रन

रन	मैंच	सत्र
1407	17	1979
1310	18	1983
1099	8	1979
1024	11	1976

एक मुलाकात फराह खान कोरियोग्राफर व डायरेक्टर

कोरियोग्राफर व डायरेक्टर फराह अब किसी परिचय की मुहताज नहीं हैं. हमारे मुबंई व्यूरों द्वारा लिये गये साक्षात्कार के कुछ अंश

प्र0 सुना है अपने सपनों के राजकुमार शिरीष कुंदर से आप तीन बार शादी करेंगी?

जी हां, सही सुना है. शिरीष के साथ पहले मैं कोर्ट मैरिज करुंगी, फिर निकाह और उसके बाद होगी साउथ इंडियन स्टाइल में शादी.

प्र0 तो बॉलीवुड में आपकी शादी को लेकर किस तरह की हचचल हैं?

मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मेरी शादी नहीं, बल्कि करण जौहर की किसी फिल्म की शूटिंग की तैयारी चल रही हो. कार्यक्रम भी कुछ ऐसा है, जायद की फैमिली ने अपने घर पर मेंहदी अरेंज की है तो शाहरुख और गौरी ने अपने घर पर पार्टी रखी हैं. साजिद और वाजिद ने म्यूजिक तो मनीष और सीमा खान ने मेरे लिए ड्रेसेज डिजाइन किए हैं.

प्र0और शिरीष को कैसा महसूस हो रहा हैं?

वे थोड़े शर्मीले किस्म के हैं. वे गंधर्व विवाह रचाने में ही यकीन रखते हैं.

प्र0 शादी के बाद आगे का क्या एजेंडा हैं?

कोशिश तो यह है कि एक घरेलू महिला की तरह जिंदगी व्यतीत करुं.

प्र0क्या आप भी करण जौहर की तरह शाहरुख खान और फील गुड फेक्टर को एक साथ जोड़कर देखती हैं?

शाहरुख सचमुच बेहद लकी पर्सन हैं. हालांकि पहले जब भी मैं करण की फिल्में देखती थी तो मुझे यह सोच–सोचकर हंसी आती थी कि ये करण हमेशा रोने–धोने वाली फिल्में ही क्यों बनाता हैं. लेकिन जब मैंने अपनी खुद की फिल्म देखी तब मुझे एहसास हुआ कि मेरी फिल्म में भी तो वहीं रोना–धोना हैं. पर एक बात है, यह मैं यकीन से कह सकती हूं कि करण मेरी तरह 'मैं हूँ ना' जैसी फिल्म नहीं बना सकता.

प्र0 आप विश्व स्नेह समाज के पाठकों को क्या संदेश देना चाहेगी?

यह बहुत ही अच्छी पत्रिका हैं? अन्य पत्रिकाओं से हटकर साफ सुथरी पत्रिका हैं. इसको पहली नजर में ही देखने से पढ़ने को मन करता हैं. इसे पढ़े और पत्रिका परिवार को सहयोग हरसम्भव सहयोग करें. मेरी ईश्वर व अल्लाह से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका अपनी शताब्दी वर्ष मनाये.

दिसंबर और जनवरी में लगेगी फिल्मों की झड़ी!

दिसंबर और जनवरी महीने में भारतीय सिनेमाघरों में नई फिल्मों की धूम मचने वाली हैं. मात्र इन दो महीनों में ही कुछ 35 फिल्में रिलीज होने वाली है और इन दो महीनो में फिल्म निर्माताओं के करीब एक अरब रुपये दांव पर लगने वाले हैं. अकेले क्रिसमस के दिन ही करीब 10 फिल्में रिलीज होने वाली हैं.

पुणे के सिनेमाघर के मालिक अरुण शर्मा ने कहा कि इतने कम समय में ज्यादा फिल्मों के रिलीज होने से सभी फिल्मों पर अच्छा या बुरा असर एक समान पड़ेगा. 24 दिसंबर को दिल मांगे मोर, रेनकोट, आबरा का डाबरा सहित 5 अंग्रेजी फिल्में रिलीज हो रही हैं. जनवरी में 5 बड़ी फिल्में रिलीज होने वाली हैं, जिनमें बेवफा, किसना, ब्लैक, इनसान और टैंगों चार्ली हैं. कुछ फिल्में तो तीन घंटे से भी ज्यादा अवधि की हैं. इसलिए सिनेमाघरों को भी इतनी फिल्मों को एडजस्ट करने में काफी परेशानी होगी. 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों के बारे में भी कहा जा रहा है कि यह भी अब 24 दिसंबर को रिलीज की जाएगी. एक प्रमुख फिल्म वितरक राजेश थडानी का कहना है कि इतनी सारी फिल्मों के पाइपलाइन में होने से अधिकांश निर्माता फिल्मों के रिलीज की तारीख पर दोबारा विचार कर रहे हैं ताकि दूसरी फिल्मों से उन्हें कम से कम प्रतियोगिता मिल सके. कुछ सिनेमाघर तो अधिकांश फिल्मों को मात्र एक सप्ताह ही दिखाएंगे.

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस पर सभी पाठकों को हार्दिक बधाई

राजा हो रंक, सबकी पसंद

राजरानी®

चाय

वाह क्या चाय हैं,

1रुपये, दो रुपये 50ग्राम, 100ग्राम, 250ग्राम, 500ग्राम व

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला, राजरानी

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,कानपुर

दाऊजी का है कहना हर अनाथ और बृद्ध है मेरा अपना

स्नेहालय

(अनाथाश्रम एवं बृद्धाश्रम)

स्व0 गोरखनाथ दूबे पुस्कालय

सूचना और सहयोग आपका, परवरिश हमारी

ग्रामः टीकर पोस्टः टीकर (पैना) जिलाः देवरिया, उ0प्र0 में
निर्माणाधीन अनाथ एवं बृद्धा आश्रम में सहयोग करें

अगर आपकी नजर में कोई अनाथ 18 वर्ष से कम उम्र का दिखाई पड़ जाए, कोई बृद्ध/बृद्धा जिसका कोई सहारा न हो मिले कृपया हमें नीचे दिये पते पर सूचित करें
आपका छोटा सहयोग, आपका छोटा सा पैसा
कर सकता है आपके किसी भाई—बहन, बुर्जूग की सेवा

lg;ksx ds fy, gesa fuEu irs ij lEidZ djsa ;k fy[ksasa%

निवेदकः
दाउजी
सचिव/प्रबंधक
जी.पी.एफ.सोसायटी
स्नेहालय (अनाथ एवं बृद्धाआश्रम)

iathd`r dk;kZy;%
,y-vkbZ-th&93] uhe ljkW;
dkWyksuh]eq.Msjk]bykgkckn
0532&3155949

Jh ih-,l-nwcs]
aks'knwcs]Rk.Uh¼xqM+Mw½
iq"sUnz¼iw½s]fxfjkthnwcs
xzke&Vhdj]iskLV&Vhdj]iSuk]
nsofj;k]m-iz-

नोटः कृपया चेक/ड्राफ्ट जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से ही काटे, सहयोग राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें